संरक्षक
डॉ. शशि गोयल

सम्पादक
रजनी सिंह

प्रचार प्रसार सलाहकार
मनीष अग्रवाल

समन्वयक
डॉ. राजेन्द्र मिलन
श्री वरूण कौशिक

वरिष्ठ सलाहकार
डॉ. राजकुमार शर्मा

सहायक सलाहकार
डॉ अरूण सिंह

बरेली प्रतिनिधि
अशोक सिंह

दिल्ली प्रतिनिधि
सुनाली सिंह

कानपुर प्रतिनिधि
अमित कुमार खिरवार

विधि सलाहकार
श्री अशोक कुमार बंसल (एड.)

कम्प्यूटर ग्राफिक्स एवं ले आउट
तरूण माथुर
सहायक : टीकम चन्द

आगरा कार्यालय
शॉप नं.–1, ब्लॉक नं.–20, प्रथम तल,
शू मार्केट, संजय प्लेस, आगरा
फोन नं. 9917952327
E-mail : locusforsuccess@gmail.com
Website: www.locusforsuccess.com

आगरा शाखा कार्यालय
राजकमल अपार्टमेन्ट, सागा कॉम्पलैक्स के पीछे
ब्लाक नं. 4, फ्लेट नं. 2, फतेहाबाद रोड, आगरा
मो. : 7500466141

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : रजनी सिंह द्वारा
प्रेम ग्राफिक्स एवं प्रिन्टर्स द्वारा
3, न्यू अशोक नगर, आगरा (यू. पी.)
से प्रकाशित **सम्पादक : रजनी सिंह**

RNI UPHIN/2006/17735

वर्ष – 14, अंक – 2

LOCUS
FOR SUCCESS

2 सम्पादक की कलम से
3 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस.....
4 महिलाओं का कोना
5 लघुकथा
6 कहानी
7 सोशल मीडिया.....
13 दिव्यांग होना अभिशाप नहीं है
14 कविता
17 आधुनिक भारत के निर्माता.....
19 भौंपू का प्रयोग.....
21 तिरुपति बालाजी मंदिर
23 अर्श से फर्श .....
25 नुस्खे
26 समाज के विकास में छोटी.....
27 रोचक तथ्य

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों पर सम्पादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही केवल आगरा कोर्ट में होगी तथा पत्रिका में प्रकाशित लेख व तस्वीरें कम्पनी की प्रॉपटी है। इसका कोई भी लेख अथवा लेख का अंश या तस्वीर प्रकाशित करने से पहले कम्पनी की लिखित अनुमति लेना जरुरी है और पत्रिका में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से 3 माह के अन्दर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी प्रकार की पूछताछ हेतु हम जवाब देने के लिए बाध्य नहीं है।

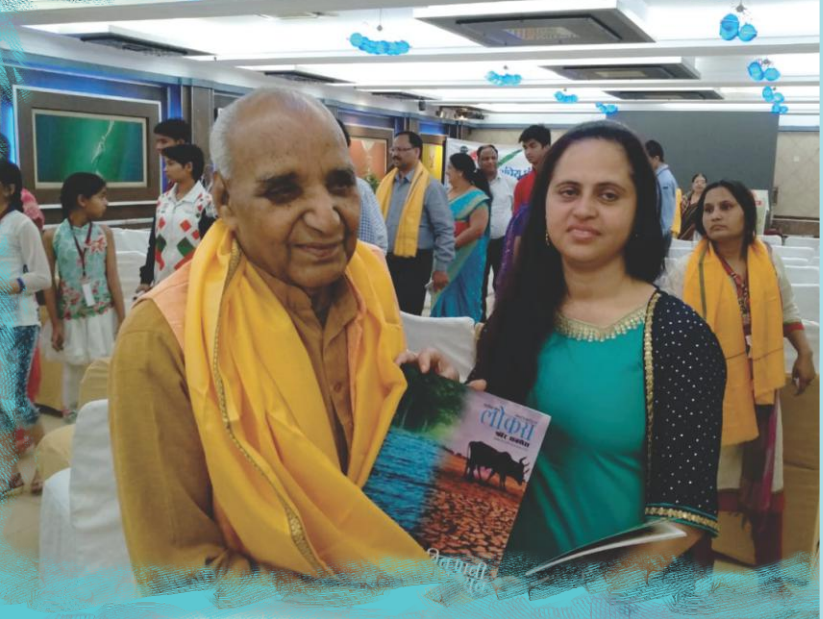

सम्पादक की कलम से

आप सभी पाठको को मेरा नमस्कार! आप सभी की दुआओं और सहयोग से पत्रिका का अगला अंक आप सभी के समक्ष उपस्थित है। आशा करती हूँ कि पिछले अंको की भाँति ही आप सभी पाठकों को ये अंक भी पसन्द आयेगा। समाज की वर्तमान स्थिति को देख कर मन बहुत क्षुब्द है, समाज में हो क्या रहा है। बड़े, छोटे, युवा, बुजुर्ग सभी राजनीति की चाल मे फंस कर अपना विवेक ही खो रहे हैं। उनको इस बात की सुध ही नहीं है, कि वो कैसी भाषा शैली का प्रयोग कर रहे हैं। क्या हम स्वय को पूर्ण देशवासी मानते है क्या हम देश के नागरिक होने की पूर्ण जिम्मेदारी निभाते हैं नही, पर बिना किसी तथ्य के अपनी बे सिर–पैर की बातें सोशल मीडिया पर बोलते और लिखते रहते हैं। सही–गलत कुछ भी, न भाषा शैली की सुध न देश की इज्जत की परवाह, न देश के सम्मानित पदों का मान, कुछ नही, प्रधान मंत्री पद हमारे देश का बहुत ही प्रतिष्ठित पद होता है। चाहें उस पद पर किसी भी पार्टी का कोई भी व्यक्ति मनोनीत हो पर पद की गरिमा का ध्यान हम सब को रखना चाहिये परन्तु ऐसा कुछ नहीं है सभी राजनीति के माहौल मे अपनी सीमाऐं लांघ रहे हैं। क्या आप लोगों ने सोचा है कि हम अपनी भावी पीढ़ी को क्या शिक्षा और संदेश दे रहे हैं। हम ऐसी शिक्षा से कैसे समाज का निर्माण करेगें जरा ध्यान दे कर देखें।

रजनी सिंह
सम्पादिका

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कृत्रिम बुद्धिमत्ता

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कृत्रिम तरीके से विकसित की गयी बुद्धि को कहते है। आज इसका क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है। आने वाले समय में इसका विस्तृत इस्तेमाल होने वाला है। वर्तमान में इसका इस्तेमाल कार निर्माण, चैटबॉट (जो वेबसाइट सर्फ करते समय चैटिंग करते हुए सह जानकारी मुहैया कराते हैं), पर्सनल डिजिटल असिस्टेंट (गूगल असिस्टेंट, अमेजन एलेक्सा,यूट्यूब,स्पीच रिकग्निशन, मौसम का पूर्वानुमान, कंप्यूटर साइंस, वायुयान निर्माण, चिकित्साशास्त्र, स्पेस स्टेशन जैसे कामो में हो रहा है।

आज अनेक कम्पनियाँ इसमें भारी निवेश कर रही हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। यह रोबोटिक्स सिस्टम के द्वारा काम करता है। यह इन्सान की सोच पर काम करता है। तथ्यों पर अपनी प्रतिक्रिया भी देता है। आईबीएम कंपनी के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैस डीप ब्ल्यू कंप्यूटर ने मशहूर शतरंज खिलाड़ी कास्पोरोव को शतरंज में हराया था।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की स्थापना जॉन मैकार्थी ने की थी। उनके दोस्तो मार्विन मिन्सकी, हर्बर्ट साइमन, ऐलेन नेवेल ने मिलकर कृत्रिम बुद्धिमता का विकास और शोध कार्य किया था।

इस तकनीक के द्वारा ऐसे जटिल कामों को किया जा सकता है जो मनुष्य के लिए सम्भव नही है।

1956 में डार्टमाउथ कॉलेज में जॉन मैकार्थी ने सबसे पहले ''आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस'' विषय पर कार्यशाला का अयोजन किया था। अपनी स्पीच में सबसे पहले ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' शब्द का उल्लेख किया था।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फायदेः-

जीपीएस (GPS) तकनीक का फायदा

कार और फोन में जीपीएस (GPS) तकनीक का इस्तेमाल करके हम किसी भी स्थान पर आसानी से पहुँच सकते हैं। हम रास्तों को भूलने के बारे में चिंतित नही होते हैं। हमें चिन्हों और साइनबोर्ड को याद रखने की जरुरत नही होती है। मनचाही जगह पर इस तकनीक का इस्तेमाल करके आसानी से पहुँच सकते हैं। इस तकनीक में ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल किया जाता है।

रोजमर्रा के कामों में इस्तेमाल

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल हमारे स्मार्ट फोन और कम्प्यूटर में भी होता है। लिखते समय की बोर्ड हमारी गलतियों को सुधारता है, सही शब्दों का विकल्प भी देता है। जीपीएस (GPS) तकनीक, मशीन पर चेहरे की पहचान करना, सोशल मिडिया में दोस्तों को टैग करना जैसे कामों में इस्तेमाल होता है।

वित्तीय संस्थानों और बैंकिंग

संस्थानों द्वारा डेटा को व्यवस्थित और प्रबंधित करने के लिए उपयोग किया जाता है। स्मार्टकार्ड सिस्टम में भी ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल किया जाता है।

खनिज, पेट्रोल, और ईधन की खोज में इस्तेमालः-

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' की मदद से हम ऐसे अनेक काम कर सकते है जो मनुष्य नही कर सकता है। समुद्र तल की गहराई में खनिज, पेट्रोल, और ईधन की खोज का काम, गहरी खानों में खुदाई का काम बहुत कठिन और जटिल होता है। समुद्र की तलहटी में पानी का गहन दबाव होता है। इसलिए रोबोट्स की सहायता से ईधन की खोज की जाती है।

खेलों की रणनीति बनाने मेंः-

अब ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल क्रिकेट, फुटबाल, शतरंज जैसे खेलों की तस्वीरें लेने में प्रमुख रुप से किया जा रहा है। यह कोच को रणनीति का सुझाव भी देता है।

चिकित्सा क्षेत्र मेंः-

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल अब चिकित्सा क्षेत्र में दवाओं के साइड इफेक्ट, ओपरेशन, ऍक्स रे, बीमारी का पता लगाने, जाँच, रेडियोसर्जरी, जैसे कामों में किया जा रहा है।

अन्य फायदे

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' से युक्त मशीन कोई ब्रेक नही लेती हैं, यह अनेक घंटो तक बिना रुके काम कर सकती है। बार बार दोहराए जाने वाले काम मनुष्य के लिए बहुत नीरस होते हैं, पर मशीने इनको आराम से कर सकती हैं। इसके अलावा फैक्ट्री, लैब में खतरनाक/ जानलेवा/ दुर्घटना जनक कामों को ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' से युक्त मशीनों की मदद से किया जा सकता है। ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल करके कम से कम गलती होती है। काम को 100% सटीकता से किया जा सकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नुकसानः-

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' से बड़े पैमाने पर बेराजगारी फैल सकती है। फैक्ट्री, कारखानों, बैंकों में इसका व्यापक इस्तेमाल करने से हजारो लोगो की नौकरी छिन सकती है।

उच्च कीमत और लागत

बैंक, ऐटीएम, हॉस्पिटल, फैक्ट्री किसी भी जगह ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' से युक्त मशीन लगाना बहुत महँगा साबित होता है। खराब हो जाने पर इसको ठीक करना भी आसान नही होता है। इनका रखरखाव भी बहुत खर्चीला होता है। ऐसी मशीनों के सोफ्टवेयर प्रोग्राम को बार बार बदलने की जरुरत पड़ती है।

रचनात्मक शक्ति का नुकसान

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' की मदद से हम नई डिजाइन, नई चीजों की रचना कर सकते हैं। बहुत अधिक संभावना है की इसके व्यापक इस्तेमाल से हम पूरी तरह ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' पर ही आश्रित हो जायें और निकम्मे और आलसी होकर अपनी रचनात्मक शक्ति खो बैठें।

खतरनाक हाथियारों का निर्माण

इस बात की बहुत सम्भावना है की इसकी मदद से मशीनें स्वचलित हथियार बना डालें जो खुद ही समूची मानव जाति का नाश कर दें। ऐसा होने पर कुछ लोग सम्पूर्ण मानव आबादी पर शासन कर सकते हैं, शोषण कर सकते हैं।

अनुभव के साथ बेहतर नही होती

जिस तरह मनुष्य नये कामों को करने पर नवीन अनुभव प्राप्त करता है और अगली बार उसी काम को बेहतर तरह से करता है, ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' की तकनीक ऐसा नही कर पाती है। वो अपने सोफ्टवेयर के अनुसार ही काम करती है।

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' तकनीक से युक्त मशीने अपने फीड प्रोग्राम के अनुसार ही काम करती हैं। मशीनों के अंदर कोई भावना या नैतिक मूल्य नही होता है, वो सही और गलत काम में फर्क नही कर पाती हैं। विपरीत परिस्थति होने पर ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' तकनीक से युक्त मशीने निर्णय नही ले सकती हैं।

निष्कर्षः-

इस लेख में हमने आपको ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' के बारे में विस्तार से जानकारी दी है। इसके अनेक फायदे हैं और साथ ही साथ अनेक नुकसान हैं। विज्ञान की इस शाखा का इस्तेमाल हमें सोच समझकर मानव कल्याण के लिए करना चाहिये। इस पर पूरी तरह से निर्भर रहना नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए हमे ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' का इस्तेमाल संतुलित रुप में करना होगा।

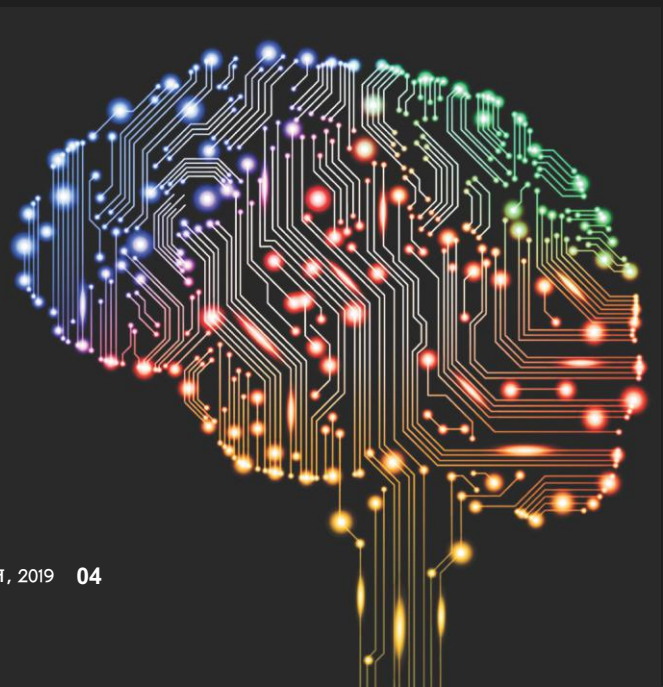

महिलाओं का कोना

पर्मानेन्ट मेकअप की 5 अहम् बातें

1. इन्हें आसानी से मिटाया नहीं जा सकता पारंपरिक टैटूज की तरह ही पर्मानेन्ट मेकअप को मिटाना बहुत मुश्किल है। अतः इस प्रक्रिया का हिस्सा बनने से पहले आपको अपना मन बना लेना होगा।

2. यह आपको गंभीर एलर्जी की समस्याएं दे सकता है हालांकि पर्मानेन्ट मेकअप के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले रंग सुरक्षित होते हैं, लेकिन तब भी ये एलर्जी की समस्या दे सकते हैं. इस प्रक्रिया को चुनने से पहले अपने फैमिली डॉक्टर या किसी फिजिशियन से जरुर बात करें।

3 सभी उपकरण कीटाणु मुक्त होने चाहिए। चूंकि एक ही उपकरण का इस्तेमाल कई लोगों पर होता है इसलिए बहुत जरुरी है कि दोबारा उस उपकरण का इस्तेमाल करने से पहले उन्हें अच्छी तरह स्टेराइल करके कीटाणु मुक्त किया जाए। इससे किसी भी तरह की बीमारी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलने की संभावना बहुत कम हो जाती है। इसके अलावा आपकी त्वचा पर किसी भी तरह का संक्रमण नहीं होगा।

4. आपको टच–अप की जरुरत पड़ सकती है। समय के साथ आपका मेकअप फीका पड़ सकता है। इस पर आपके मेटाबॅलिजम और अन्य बाहरी घटकों का प्रभाव पड़ता है. अतः हो सकता है कि आपको टच–अप के लिए अपने मेकअप टेक्नीशियन के पास समय–समय पर जाना पड़े।

5. क्लासिक्स चुनें ग्रैफिक लाइनर्स या बोल्ड आइब्रोज़ आजकल खूब चलन में हैं। लेकिन हमारी सलाह है। कि आप हालिया चलन को चुनने के बजाय क्लासिक आइलाइनर्स और सौम्य लिप कलर्स का चुनाव करें, ताकि समय के साथ ये पुराने जमाने के लगने के बजाय हमेशा ही खूबसूरत लगें।

लघुकथा

सूखी आँखों का विलाप

अनुजा के सामने बैठी तीन दिन पहले मृत्यु को प्राप्त हुए कर्मचारी की विधवा पत्नी प्रेमवती विलाप कर रही थी। हालाँकि आँखों में आँसू की एक बून्द भी नहीं थी पर रोना बदस्तूर जारी था। अनुजा उसके मरहूम पति की फाइल निकाल कर पेंशन, ग्रेच्युटी, फण्ड एवं अन्य देयों के निस्तारण की प्रक्रिया में तटस्थ भाव से मग्न थी। अनुजा ने प्रेमवती के विलाप को रोकने का रत्तीभर भी प्रयास नहीं किया और बिल्कुल नॉर्मल लग रही थी। अक्सर ऐसी ह्रदयहीनता पर साथ के कर्मचारी अनुजा को तंज कसते हैं कि ''स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है, उसका दुःख नहीं समझती''।

अनुजा ने जब भी उनको यह कहा कि कुछ औरतें पति की मौत पर खुश होतीं हैं तो उल्टा उसे ही बहुत कुछ उल्टा–सीधा सुनना पड़ा था। तभी चेहरे को ढाँपे बैठी प्रेमवती की फुसफुसाई आवाज सुनाई दी ''मैडम कितेक रुपइया मिलेगो''।

अनुजा ने चश्मा उतार कर साइड में रखा और कुछ कहने से पहले सहयोगियों को बेचारी और दुखी औरत की ओर देखने का इशारा किया और उसकी तरफ मुखातिब होकर कहा ''करीब तीस हजार पेंशन और कुल मिला कर रुपए 30 लाख''
प्रेमवती के चेहरे पर पड़ा परदा हट चुका था, आँखों में चमक आ गई थी और मुस्कान भिंचे होठों से भी टपकने को आतुर थी। उसकी आँखों में सुनहरे भविष्य के ख्वाब दिखाई दे रहे थे और सहयोगियों की आँखों में हैरत उमड़ रही थी।

यह नजारा देखकर अनुजा बोल ही पड़ी ''यह उन औरतों में से एक है, जिनके पति जीते जी इनके हाथ पर घर खर्च के रुपये भी पूरे नहीं देते ...शराब और जुए में से कुछ बचेगा तभी तो परिवार पर खर्च करेंगें। मैं जानती हूँ कि यही वजह है कि यह अपने पति की मौत पर दुःखी नहीं खुश है और साथ में खुश रहेंगे इसके बच्चे भी.....बस दुआ करती हूँ कि ऐसी खुशी किसी भी परिवार को न मिले .....

पूनम जाकिर
आगरा

कहानी

मुआवजा

दो बीघा जमीन में लहलहाती गेहूँ की फसल को ओलों ने चौपट कर दिया था। बेचारी सन्तों की तो जैसे जान ही निकल गई थी दो बीघा खेत ही तो बचा था, अब उसके पास। पति ने तो यौवन के उन दिनों में ही साथ छोड़ दिया था, जब सुखिया उसकी कोख में आया था। ईश्वर ने बीच मझधार में सन्तो के जीवन की नैया की पतवार उससे छीन ली। सन्तो ने कभी जी भरकर लाखन को निहारा भी नहीं था। पूरे दिन लाखन मेहनत मजदूरी के लिए बाहर ही रहता था। शाम ढले जब वो घर आता था, तो चौके के बाहर खाने के लिए बैठ जाता था। सन्तो को दिये की परछाई से ज्यादा नहीं दिखता। जब कोशिश करती, परन्तु घूघंट के पार उसको लाखन का चेहरा कभी परछाई से ज्यादा नहीं दिखता। जब चेहरे से घूंघट हटता तो दीपक बुझ चुका होता था। दस वर्ष की उम्र में ही सन्तो का विवाह लाखन से हो गया था। जब उसे शादी विवाह का मतलब भी समझ में नहीं आया था। लेकिन गौना पाँच वर्ष बाद हुआ था। शादी के मन्डप में सन्तो पूरी रात उँघयाती रही कभी आँख लग जाती तो भाभी चुकोटी काट कर जगाती। नटखट सन्तो को अपनी शादी गुड्डा–गुड़िया की शादी से ज्यादा नहीं लग रही थी। गुड्डा की शादी का खेल तो वो हर साल खेलती थी, मगर इस साल वो खुद शादी वाली गुड़िया बनी थी, कि एक दिन उसे भी ससुराल जाना पड़ेगा। अपनी अम्मा को छोड़ते समय सन्तो बहुत रोई थी। उसने ससुराल जाने से बहुत मना किया था, मगर अम्मा–बापू ने समझा–बुझा कर ससुराल भेज दिया। एक महीने तक तो सन्तो ने किसी से बात नही की । अचानक एक दिन बापू उसे लेने आ गए। सन्तो बापू को देखकर बहुत रोई। बापू उसे अपने साथ घर ले गए। अम्मा से मिलकर सन्तो बहुत खुश हुई। आते ही सन्तो अपनी सहेलियों से मिलने गई। सन्तो अपने मायके आकर बहुत खुश थी। लेकिन ज्यादा दिन खुश न रह सकी। दस दिन बाद ही सन्तो के ससुर बैलगाड़ी लेकर उसे लेने आ गये। बेचारी सन्तो को ससुराल जाना पड़ा। कुछ दिन बहुत उदास रही पर उसकी पीर समझने वाला कोई नहीं था। पति लाखन बीस–बीस दिन मजदूरी करने शहर चला जाता था।

एक दिन सन्तो के ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा जब उसे पता चला कि लाखन की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। सन्तो का गौना हुए आठ महीने ही हुए होगें कि उसकी माँग का सिंदूर उजड़ गया। बेचारी सन्तो सोलह वर्ष की उम्र में ही विधवा हो गई थी। शादी का मतलब समझ पाती इससे पहले ही भगवान ने उसके जीवन की पतवार छीन ली। सागर में उसे अपनी नाव डूबती नजर आ रही थी। काली भयानक रात बीच समुन्द्र में बिना नाविक की नाव में बैठी, भगवान को याद कर रही थी। चारों तरफ भयंकर अन्धकार, वो अकेली, कैसे पार लगेगी नैया? आँख बंद किये बैठी भोर का इन्तजार करने लगी। आँख खुली तो दूर उसे रोशनी की एक झलक नजर आई। उसे एहसास हुआ, उसकी कोख में लाखन का अंश पल रहा है। उसे लगा कोई तो सहारा है जो उसके जीवन की नैया पार लगायेगा। लाखन के जाने के पांच महीने बाद सन्तो ने सुखीराम को जन्म दिया। सुखीराम सन्तो के जीने का सहारा बना।

सन्तो सुखीराम के सहारे अपना जीवन काटने लगी। सुखीराम के आने से उसके जीवन में फिर से खुशी ने दस्तक दी। मेहनत–मजदूरी कर हर दु:ख दर्द सहकर उसने सुखी को पाला। हर दु:ख में उसने सुख की अनुभुति की और बेटे को कभी कष्ट नहीं होने दिया। बेटे को खाना जरुर खिलाया चाहे खुद भूखी सोई। खुद ठंड से कांपती रही मगर बेटे को आंचल से गर्मी दी। माँ की छाया में पलकर सुखीराम बीस वर्ष का हो गया। सन्तो ने उसकी शादी कर दी। घर में गुड़िया सी बहू आई तब सन्तो को थोड़ा सुख मिला। बहू काम–काज में हाथ बंटाने लगी थी। सन्तो से भी अब ज्यादा काम नहीं होता था बेचारी दमा की मरीज हो गयी थी। सन्तो के हिस्से में दो बीघा जमीन थी। जिसमे थोड़ा बहुत अनाज हो जाता था। बेटा सुखीराम पैसे कमाने के लिए शहर चला गया था। वहां से पैसे भेजता रहता था। कुछ सालों बाद सुखीराम अपनी पत्नी को भी शहर ले गया। सन्तो बेचारी फिर से अकेली रह गई थी। सन्तो ने अपना खेत बटाई पर दे दिया था। उससे जो भी अनाज मिलता उसी से बेचारी गुजारा कर लेती। समय से पहले सन्तो बूढ़ी हो गई थी।

इस साल ओलों ने उसकी पूरी फसल बरबाद कर दी। सन्तो करती भी तो क्या? भगवान के भरोसे उसने खुद को छोड़ दिया। इस साल क्या होगा? बेटे ने भी उसकी सुधि नहीं ली। इस वर्ष पूरे देश में ओलों और बारिश से सारी फसल बरबाद हो गई थी। इससे दु:खी कई किसानों ने आत्महत्या कर ली इसे देखकर सरकार ने किसानों को मुआवजा देने की घोषणा कर दी। इससे किसानो ने थोड़ी राहत की सांस ली। चार चक्कर तहसील के लगाए तब जाकर छः सौ पचास रुपये मुआवजे का चेक उसे मिला। बेचारी सन्तों चेक का क्या करे? उसे समझ नहीं आ रहा था। सुखीराम का तो पता ही नहीं कब आएगा? आएगा भी या नहीं। अब तो ना सुखिया का मनीआर्डर आता ना ही उसकी कोई खबर। बेचारी सन्तो फिर भी दिन भर उसकी राह ताकती रहती। बूढ़ी आँखें सुखिया की राह देख–देख कर पथरा गई थी। मगर सुखिया की कोई खबर नहीं आई। चैक के पैसे लेने बैंक कैसे जायें? गाँव से दो कोस दूर बाजार में बैंक थी। दमा की मरीज सन्तो इस गर्मी में दो कोस पैदल अकेली कैसे जाये? अपने पड़ोस के लड़के राजू को बीस रुपये देने का वादा करके साथ जाने के लिए राजी किया। जेठ की धूप से बचने के लिए सवेरे जल्दी सन्तो बैंक के लिए चल दी। जैसे–तैसे वह बैंक पहुँची मगर उसकी सांस उखड़ गई बड़ी देर में उसकी हालत सुधरी। अभी बैंक खुलने में एक घंटा बाकी था। सन्तों पेड़ के नीचे लेट गई। बैंक के बाहर मेले जैसी भीड़ लगी थी। बैंक खुलते ही लम्बी लाइन लग गई। राजू ने सन्तो को महिला लाइन में खड़ा कर दिया। लाइन बहुत लम्बी थी और बूढ़ी सन्तो का जी तो पहले ही घबरा रहा था। एक घंटे बाद सन्तो का नम्बर आया तो उसके जी में जान पड़ी। उसने खिड़की में से चैक अन्दर किया तो बाबू ने देखते ही चैक वापस कर दिया।

''अम्मा अपना वोटर कार्ड दिखाओं '' बाबू ने कहा। सन्तो को समझ नहीं आया बाबू क्या मांग रहा है?

''बेटा मोपे तो जेई कागज है''
बाबू ने धीरे से समझाते हुए कहा,

''अम्मा वोट डालने जाती हो वो पहिचान पत्र लाओ''।

''वो तो मैं ना लाई'' सन्तो बोली,

तो कल लेके आना तभी पैसे मिलेगें।

''बाबू ने सन्तो को लाइन से हटने का इशारा करते हुए कहा।''

बेचारी सन्तो बैंक से बाहर आ गई। भीड़ और गर्मी में उसका दम घुटने लगा। राजू सन्तो को एक पेड़ के नीचे ले गया। सन्तो को खुली हवा में सांस मे सांस आई। पूरी दुपहरी पेड़ के नीचे लेटी रही फिर शाम ढले घर को चल दी घर पंहुची तो उसमें इतनी हिम्मत नहीं बची कि वो अपने लिये रोटी बना पाए। निढाल होकर खाट पर लेट गई। कब उसे नींद आ गई पता ही नहीं चला। भोर में जल्दी उसकी आँख खुली। उसने अपना वोटर कार्ड ढूंढ़ा बड़ी मुश्किल से उसे वोटर कार्ड मिला लेकिन उसका आधा हिस्सा चूहे कुतर गए थे। उसका फोटो और नाम–पता तो बच गया था राजू को फिर बैंक जाने के लिए मनाया और जौ के सत्तू खाकर सन्तो राजू को लेकर बैंक चल दी। उसे पूरी उम्मीद थी, आज तो पैसे मिल ही जायेंगे। आज तो बैंक में कल से भी ज्यादा भीड़ थी। सन्तो भी महिला लाइन में लग गई। भीड़ भाड़ को देखकर सन्तो का दम घुटने लगा लेकिन पैसे मिलने की उम्मीद ने उसे हिम्मत दी और अपनी बारी का इन्तजार करने लगी। घंटे भर बाद उसका नम्बर आया। उसने चैक के साथ वोटर कार्ड भी खिड़की में बढ़ा दिया। वोटर कार्ड और चैक को क्लर्क ने गौर से देखा और बोला,

''अम्मा तुम्हारा नाम क्या है?''

''सन्तो'' सन्तो धीरे से बोली।

लेकिन तुम्हारे चैक पर तो शान्ति देवी लिखा है। और वोटर कार्ड में सन्तो है।

''क्लर्क ने जोर देकर कहा।

सन्तो घबरा गई। बोली,
'' नाम तो शान्ति है, गाँव में सब सन्तो बुलाते हैं।
''क्लर्क बोला,

''अम्मा तहसील जाकर चैक पर अपना नाम सही करा लाओ तब पैसे मिलेंगे।''
सन्तो घबरा गई बोली,

''बेटा मैं ही शान्ती हूँ, दोनों मेरे ही नाम है।

क्र्लक ने कड़क आवाज में कहा, ''अम्मा नाम सही करा कर लाओ तभी पैसे मिलेंगे। सन्तो गिड़गिड़ाई मगर बाबू ने एक ना सुनी। बेचारी सन्तो बैंक से बाहर आई राजू से बोली,।। चल बेटा अब पैसे ना मिलेंगे।। राजू बोला,।। अम्मा मेरे पैसे तो दिए नहीं।

सन्तो बोली, ''कहाँ से दूँ बेटा, पैसे तो मिले ही ना''

सन्तो की नजर गाँव के प्रधान दयाराम पर पड़ी। सन्तो चिल्लाई, ''दया प्रधान बेटा।''
दया प्रधान ने सन्तो को देखा तो उसके पास चला आया और पूछने लगा, हाँ चाची बोलो, का हुआ?''

।। बेटा चैक में नाम गलत छाप दियो, से बाबू ने पैसे ना दिये दो दिन से चक्कर काट रही हूँ।'' सन्तो ने दुखड़ा रोया।

चाची चिन्ता मत कर सौ रूपये देने पडेगें नाम ठीक हो जायेगा। ''प्रधान जी ने समझाया।

''बेटा मेरे पास तो एक रुपया ना हिं हैं।'' अम्मा बोली।

''कोई बात नहीं, बाद में दे दियों।''प्रधान जी बोले और अम्मा के हाथ से चैक ले लिया।

''घर जाओं, मैं सही करवा के शाम को दे आंऊगा।''

सन्तो राजू को लेकर वापिस अपने गाँव चली गई । सन्तो हारी थकी घर पहुँची। शाम को फिर सत्तू खाकर गुजारा किया। प्रधान जी ने शाम को चैक सही करवा के दिया। खाट पर लेटते ही सन्तो की आँख लग गई। सुबह उसने फिर राजू को पुकारा। राजू बोला,

''तीन दिन के साठ रुपये हो गये। आज रुपये ले लूँगा।''

''ठीक है बेटा ले लियो।''

सन्तो राजू को लेकर फिर बैंक पहुंची और लम्बी लाइन में लग गई।

आज उसे आस थी कि पैसे जरुर मिल जायेंगे। काफी इंतजार के बाद उसका नम्बर आया और इस बार उसे रुपये मिल गये ।गेट पर आते ही प्रधान और राजू ने घेर लिया, सन्तो ने प्रधान को सौ रुपये और राजू को साठ रुपये दिये। मुआवजे के चार सौ रुपये बचें। अब थोड़े दिन का तो गुजारा चल ही जाएगा।सुखीराम का पता नहीं कब अपनी अम्मा से मिलने आएगा? सुखीराम को याद कर शान्ती की आंखे झलक गई।

राजू बोला, ''अम्मा घर चलो भूख लग रही है।''

''चल बेटा''

सन्तो बोली और राजू के साथ तपती धूप में खुशी–खुशी गाँव को चल दी। आधे रास्ते में ही उसकी सांस उखड़ गई। वो हांफने लगी। राजू ने उसे पेड़ की छांव में लिटाया। कहीं आस–पास पानी भी नहीं था। सन्तो को सांस लेने में तकलीफ बढ़ती गई। राजू कुछ न कर सका। सन्तो की हालत देखकर राजू डर गया। सन्तो को वही छोड़कर गाँव में खबर करने के लिए चला गया। सन्तो हांफ रही थी, कोई उसे पानी पिलाने वाला नहीं था। बार–बार सुखिया का नाम लेकर पुकार रही थी। मगर सुखिया तक माँ की आवाज नहीं पहुँच रही थी। उसे लग रहा था, आज उसका आखिरी समय आ गया है। बेचारी मरने से पहले अपने लाडले का मुँह देखना चाह रही थी। कितने दुःख सहकर उसे पाला था। आज ऐसे समय में भी उसका बेटा उसके साथ नहीं हैं। सुखिया की याद में उसकी आंखो से आंसू बहने लगे। उसे लग रहा था, अब वह सुखिया को कभी नहीं देख पायेगी। मुआवजे के इन पैसों का अब वो क्या करेगी? इस मुआवजे की वजह से ही तो उसकी यह हालत हुई हैं। हांफते–हांफते उसने मुआवजे के पैसे अपनी साड़ी के पल्लू में ये सोचते हुए बाँध लिए कि शायद सुखिया आयेगा तो उसके काम आएगें। उसकी साँस तेजी से उखड़ने लगी।

''सुखिया, सुखिया.... सुखिया.....
''कहते –कहते उसकी सांस थम गई।

भूपेन्द्र सिंह 'बेगाना'
आगरा

होली

होलिका हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष की बहन थी दोनों भाई असुर थे। प्रहलाद हिरण्यकश्यप का पुत्र था जो कि विष्णु भगवान (श्री हरि) का एक बड़ा ही जन्मजात भक्त था। होलिका उसकी बुआ थी। हिरण्याक्ष का वध वाराह अवतार विष्णु भगवान ने किया था। वह हिरण्यकश्यप का छोटा भाई था। सतयुग का वर्णन है विष्णुपुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार दैत्यों के आदिपुरुष कश्यप ऋषि और उनकी पत्नी दिति के दो पुत्र हुए। हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष पौरागिक कथानुसार हिरण्याक्ष धरतीमाता (पृथ्वी) को रसातल में ले गया था जिसकी रक्षा के लिए आदि नारायण भगवान विष्णु ने वाराह अवतार लिया, कहते हैं वाराह अवतार का जन्म ब्रह्मा जी की नाक से हुआ था। कुछ मान्यताओं के अनुसार यह भी कहा जाता है कि हिरण्याक्ष और वाराह अवतार में कई वर्षो तक युद्ध चला। क्योंकि जो राक्षस स्वंय धरती को रसातल में ले जा सकता है तो आप सोचिए उसकी शक्ति कितनी होगी? फिर वाराह अवतार के द्वारा मारे जाने वाले थप्पड़ की आवाज के द्वारा हिरण्याक्ष का वध हुआ।

हिरण्यकश्यप स्वंय को भगवान समझता था अपनी पूजा करवाता था। भगवान (सूर्य) अस्ताचल के निकट पहुँच चुके थे। धरती का प्रत्येक जीव गायें और अन्य पशु–पक्षी सम्पूर्ण दिवस उन्मुक्त विचरण के उपरान्त अपने नियत विश्रामगृह की ओर लौट रहे थे। वातावरण की हलचल शनैः शनैः शांत हो रही थी, हिरण्यकश्यप का कर्कश अट्टहास वातावरण को और भी भयाक्रांत बना रहा था जिसमें बेबस राजमाता कयाधु के प्राण पसीज रहे थे। हिरण्यकश्यप की पत्नी राजमाता कयाधु की चिंता जायज थी क्योंकि हिरण्यकश्यप नही चाहता था कि मेरे जीतेजी मेरे सामने कोई किसी और की पूजा करे, किसी और का नाम ले। फिर चाहे उसका पुत्र ही क्यों न हो। एकाएक मधुर–मध्यम स्वर में भक्त बालक प्रहलाद ने अपनी माँ कयाधु से बड़े निर्दोष भाव से पूछा –

''माँ आप मेरी इतनी चिन्ता क्यों करती हैं? क्या कोई दानवी शक्ति, भगवान श्री हरि की अपार शक्ति से भी बढ़कर हो सकती है भला?'' परमात्मा के प्रति अपने पुत्र के अगाध प्रेम को देखकर कयाधु का हदय हर्ष और शोक से व्याकुल हो उठा, शब्दाभाव में मां के नेत्रों से अश्रुधारा प्रस्फुटित हो उठी।

ब्रह्म से प्राप्त वरदान के मद में मदान्ध हिरण्यकश्यप के लिये इन्द्रादि देवताओं को जीतकर भी, एक नन्हें से बालक के समक्ष पराजित होना अस्वीकार्य था। सम्पूर्ण चराचर जगत में ऐसा कोई न था जो उसके समक्ष उसके अतिरिक्त किसी और का गुणगान करे और सकुशल रहे, किन्तु यह क्या कि उसका पुत्र लाख समझाने और प्रयत्न करने के बाद भी भगवान श्री हरि का ही गुणगान करता था, भला हिरण्यकश्यप यह कैसे सहन कर सकता था? अब प्रह्लाद का परमात्मा के प्रति भक्ति–भाव उसका सबसे बड़ा शत्रु हो चुका था, ऐसा शत्रु जिससे वह हर बार पराजित हो जाता था। अंततः हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका को अपने कुत्सित उद्देश्य का भागी बनाते हुये उससे कहा–''होलिका तुम ब्रह्मा के वरदान से प्राप्त साड़ी पहनकर, प्रह्लाद को गोद में लेकर जलती हुई अग्नि में बैठी रहना जिससे वरदान के कारण तुम तो सुरक्षित रहोगी और प्रहलाद उसी अग्नि में भस्म हो जायेगा।''

कहते हैं जब धरती पर पाप, अत्याचार बढ़ जाता है तो भगवान अवतार के रुप में प्रकट होते हैं। मारने वाले से बचाने वाला बलवान होता है भगवान की भक्ति में बड़ी शक्ति होती है। यह यथार्थ है कि सत्य की हमेशा विजय होती है।

होलिका भी हिरण्यकश्यप के वचनानुसार कलुषित उद्देश्य को

लेकर भक्त प्रहलाद को अपनी गोद में बैठाकर बैठ गई, दास ने राजा की आज्ञा पाकर लकड़ियों के ढ़ेर (चिता) में आग लगा दी, लकड़ियाँ धूँ–धूँ कर जलने लगी। परन्तु यह क्या! प्रहलाद को जला डालने के लिये वरदान से प्राप्त साड़ी पहनकर निश्चिन्त होलिका स्वंय ही जलने लगी। होलिका ने जलते समय चीखते हुये प्रश्न किया–

''यह मेरे साथ धोखा है, मुझे तो यह वरदान दिया गया था कि इस साड़ी को पहनने पर मेरे ऊपर अग्नि का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, परन्तु मैं तो जल रही हूँ?''

प्रतिउत्तर में आकाशवाणी हुई,

''हे ! दुष्ट होलिका! तू किस नियम की बात कर रही है? मैंने तुझे यह दैवीय शक्ति श्रेष्ठ उद्देश्यों के साथ लोकमंगल कार्य के लिये प्रदान की थी, किन्तु जिसकी अनुकम्पा से तुझे यह शक्ति मिली, तू आज उसी भक्त के अहित के लिये इसे प्रयोग करना चाह रही थी, यह मेरे द्वारा स्थापित न्याय के नियमों का उल्लंघन है। तेरा यह अपराध क्षमा योग्य नहीं है।''

अंततः उस अग्नि में होलिका स्वंय ही जलकर भस्म हो गयी और भक्त प्रहलाद श्री हरि के नाम का भजन करते हुए भीषण अग्नि की लपटों में भी जस के तस सकुशल रहे और उसमे से निकल कर बाहर आ गये। यह अलौकिक दृश्य देखकर सभी भक्तजन प्रसन्नता से झूम उठे, दसों दिशाओं से पुष्पों की वृष्टि होने लगी। सभी लोग आनंदित होकर नाचने गाने लगे। पूर्णिमा के शशि की ज्योत्सना और भी प्रभावपूर्ण प्रतीत होने लगी। चारों ओर हर्षोल्लास और मंगल गान गाया जाने लगा।

इस प्रकार होली के त्योहार की शुरुआत हुई। होली का त्योहार बसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय लोगों का त्योहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगो का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रुप से दो दिन मनाया जाता है यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्योहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहाँ भी धूम–धाम के साथ मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है दूसरे दिन, जिसे प्रमुखतः धुलेड़ी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर–गुलाल इत्यादि लगाते और फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर–घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है । ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता वैमनष्यता को भूलकर एक दूसरे के गले मिलते हैं और फिर आपस के गिले–शिकवे दूर कर शौहार्द हर्षोल्लास से मनाते हैं, दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने–बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्त्रान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचने वाली प्रकृति भी इस समय रंग–बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग–बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। नये अवृष्टि की शुरुआत होती है। बच्चे–बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रुड़ियाँ भूलकर ढोलक–झाँझ–मंजीरों की धुन के साथ नृत्य–संगीत व हीरो, रसिया लोकगीत गया जाता है, रंग–गुलाल से सराबोर होकर व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया होली का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है इस दिन कांजी व दहीबड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है। नए कपड़े पहन कर होली की शाम को लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया, नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा महत्व है।

इस पौराणिक त्यौहार मनाने में एक समानता और मान्यता यह भी है कि असत्य पर सत्य, बुराई पर अच्छाई की विजय और दुराचार पर सदाचार की प्राप्त कर विजय के उपलक्ष्य में उत्सव मनाया जाता यह भारत के ब्रज क्षेत्र में तो राधा कृष्ण की होली मुख्य रुप से है ही, विश्वभर में भी होली का त्योहार बहुत प्रसिद्ध है।

–डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा
साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी
आगरा

सोशल मीडिया और इलेक्शन

यदि पुराने समय की बात करें तो हमारे पास ऐसा कोई सशक्त साधन नहीं था जिससे हम अपने भावों और विचारों को खुल कर दूसरों के समक्ष पेश कर सकें और जन–जन तक पहुँचा सकें। आज के समय में सोशल मीडिया अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का एक सशक्त साधन है।

आज सोशल मीडिया हमारे जीवन के हर एक क्षेत्र में प्रभावी हो रहा है। खास कर चुनाव की बात करें तो आम पारम्परिक पद्वति के इस्तेमाल के बदले अब ज्यादातर उम्मीदवार सोशल मीडिया के माध्यम से चुनाव प्रचार करना चाहते हैं और कर भी रहे हैं। आज सोशल मीडिया पर आए दिन चुनावी मुद्दों को लेकर गरमा गरम बहस होती रहती है। इन्ही से हम पार्टियों की गतिविधियों पर नजर रखते हुए सही उम्मीदवार को चुन सकते हैं।

मीडिया का अपना कोई प्रभाव नहीं होता। मीडिया केवल माध्यम है लेकिन फिर भी आज आम जनता को पुराने समय की तरह मूक दर्शक नहीं बनना पड़ता । वह सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी बड़ी पार्टी या व्यक्ति विशेष से अपने हितों में सवाल–जवाब कर सकती है।

किसी समय चुनाव प्रचार कर ने के लिए उम्मीदवार घर घर जाकर वोट माँगते थे व लाउडस्पीकर द्वारा शोर मचा–मचा कर अपनी उपलब्धियाँ गिनवाते थे। पर आजकल ऐसा नही होता खासकर शहरों में तो न के बराबर। हाँलाकि जगह जगह रोड शो, भाषणों का दौर चलता रहता है। परन्तु आज मीडिया चुनाव प्रचार–प्रसार का अच्छा साधन है।

आज अखबारों, रेडियो, टीवी, फेसबुक आदि के द्वारा नेताओं के किये गये कार्यों उनकी नाकामियों, भष्टाचारों, उनकी कर्मठता या अच्छे कार्यो के बारे में सही जानकारी जनता तक पहुँचती है। इसके द्वारा हमें सही जनप्रतिनिधि चुनने में मदद मिलती है।

लेकिन मीडिया तो एक माध्यम है हमें सही गलत बताने का, असली चुनौती तो हमारे द्वारा सही चुनाव करने की है

''मताधिकार सबका अधिकार न हो बेकार''

अर्चना अग्रवाल
आगरा

दिव्यांग होना अभिशाप नहीं है

अगर कोई व्यक्ति किसी अंग से कमजोर होता है तो उसे यह कह कर के प्रताड़ित नहीं करना चाहिए की वह कुछ नहीं कर सकता क्योंकि यह स्थिति कभी भी किसी के साथ आ सकती है। पहले विकलांग के रुप में दिव्यांग को जाना जाता था लेकिन वास्तविकता यही है कि अगर दिव्यांग व्यक्ति का कोई अंग कमजोर होता है तो परम पिता परमेश्वर उस कमजोरी को दूर करने के लिए उसे एक ऐसा हुनर देता है जिससे उसकी दिव्यांगता कहीं नहीं टिकती। हमें दिव्यांगों को कभी भी यह याद नहीं दिलाना चाहिए कि वह कमजोर है हम निजी जिंदगी में अगर किसी दिव्यांग व्यक्ति को देखते हैं तो अक्सर उससे पूछ लेते हैं कि क्या हुआ है आपको और कैसे हुआ। कभी आपने यह विचार किया है कि उसे इस सवाल का उत्तर जिंदगी में कितनी बार दिया होगा और आगे भी देना होगा। मेरा मानना है कि उसकी इस परिस्थिति को उसे बार–बार याद दिलाना ठीक नहीं बल्कि उसके गुणों की ओर अपना ध्यान आकर्षित कर के और दिव्यांग का ध्यान भी आकर्षित करा के उसके उज्जवल भविष्य की कामना करनी चाहिए और उसे यह बताना चाहिए कि आप समाज में सबसे अलग हैं और आपके अंदर वह क्षमता है जो आम इंसान में नही होती। वैसे देखा जाए तो यह वास्तविकता है। हमेशा यह प्रयास करना चाहिए कि दिव्यांगों को समाज की मुख्यधारा में जोड़कर ही रखें उनको समाज का ही एक अंग माने क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि अगर कोई दिव्यांग कहता है कि मैं यह कार्य कर सकता हूँ तो उसकी इस हिम्मत को शाबाशी देनी चाहिए और उसकी मदद यह समझकर करनी चाहिए की हमारे चार हाथ पैर हैं फिर भी हम किसी कार्य को करने के लिए बड़ी मुश्किल से हाँ बोलते हैं पर शारीरिक रुप से अक्षम होते हुए भी दिव्यांग बोल रहा है कि मैं इस कार्य को कर सकता हूँ तो यह अपने आप में एक बहुत बड़ी बात होती है जब भी अगर आपको लगता है कि आप मदद करने में सक्षम हैं तो सबसे पहले आप दिव्यांग जनों की मदद के लिए आगे आए क्योंकि इनकी दुआओं में असर होता है। हमेशा जब भी किसी दिव्यांग को देखो तो उससे दो बातें सकारकत्मता की जरुर करें जिससे दिव्यांगो को हर समय यह महसूस हो कि उसकी जिंदगी बेकार नहीं हैं। मैं समाज के लोगों से यही कहना चाहूंगा कि अगर आप कोई ऐसा बिजनेस कर रहे हैं या कोई ऐसी फैक्ट्री चला रहे हैं या आपका कोई ऐसा संस्थान है जहां पर आपको ऐसे वर्करों की आवश्यकता है जिनका काम केवल कुर्सी पर बैठने का है तो आप सबसे पहले दिव्यांगों को मौका दें क्योंकि समाज में आज भी बहुत से ऐसे दिव्यांग हैं जो पढ़े लिखे हैं पर लोग उन्हें नौकरी नहीं देते आप जरा सोचिए पढ़ने लिखने के बाद भी अगर उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर नहीं मिलेगा तो उनकी मानसिक स्थिति क्या होगी। दिव्यांग होने के कारण मै दिव्यांग जन की हर एक स्थिति को बखूबी समझता हूँ और लोगों को इसलिए प्रेरित करता हूं क्योंकि अगर दिव्यांग पढ़ लिख जाता है या उसके हुनर को सही आयाम मिल जाता है तो वह अपना जीवन आत्मनिर्भर बनाकर अच्छे से जी सकता है अन्यथा उसके पास केवल दो रास्ते होते हैं या तो वह भीख मांगने के लिए मजबूर हो जाता है या फिर आत्महत्या करने के लिए। दिव्यांगजन का हृदय बहुत ही कोमल होता है और वह छोटी–छोटी खुशी से अपने आप को समाज में अच्छे से जीने का प्रयास कर लेता है। इसलिए यह बात हम सबको समझानी पड़ेगी कि दिव्यांग होना अभिशाप नहीं बल्कि एक ऐसी स्थिति है जो देखने में कमजोर लगती है लेकिन अंदर से बहुत मजबूत है और एक आम इंसान से भी बढ़कर है।

पंडित मनीष शर्मा
संस्थापक
सार्मथ्यवान (दिव्यांगों को नई दिशा)
(अंतरराष्ट्रीय भजन भूषण)
आगरा

कविता

बदल गई हूँ मैं

बदल गई हूँ मैं
सिखायीं गयीं थीं
जो बातें मुझे जन्म से
उन पर लगाया है मैंने प्रश्नचिहन।
घोली गयीं थीं
जो बातें मेरे संस्कारों में
उन्हे छान लिया है मैंने।
रंगा गया था मुझे
जिन रंगों से
उन्हें धो दिया है मैंने।
रोका गया था मुझे
जिन आसमानों से
उन्हें छू लिया है मैंने।
जहां वर्जित था
मेरे लिए पदचिहन बनाना
वहां गाड़े हैं मैंने मील के पत्थर।
ढका गया था मुझे
जिन आवरणों से
उनको बदल दिया है मैंने।
क्योंकि मैं नही हूं
कोई वस्तु
व्यक्ति हूँ मैं।
तस्वीर नहीं हूँ
व्यक्तित्व हूँ मैं।
मैं भी हूँ तुम्हारी तरह
हाड़–मास का पुतला
जिसके पास है
एक दिमाग और दिल भी।
जान गयी हूँ बहुत कुछ सीख गयी हूँ बहुत कुछ
रंगों की असलियत
आसमानों की सीमा
धरती का विस्तार
वर्जनाओं का अर्थ
आवरणों का उद्देश्य।
कभी जो सही था
यह जरुरी नहीं
वह अब भी सही हो।
बदल गयी हूँ मैं तो
पर बदलना होगा तुम्हें भी
स्वयं को
अपनी सोच को।
मेरे लिए ही नहीं
अपने लिए भी।

डॉ. सुषमा सिंह
आगरा।

किताबें

सबक जिन्दगी का सिखाती किताबें।
हमें नेक रस्ता दिखाती किताबें।।

सफर जिन्दगी का बड़ा बेरहम है।
हमें बद्हवा से बचाती किताबें।।

दिमागों की सारी थकन के मुकाबिल।
हमें छेड़ती गुदगुदाती किताबे।।

कोई फूल अपने वरक से गिराकर
हमें याद–ए–दिलबर दिलाती किताबें।।

मेरी राह के 'दीप' सब जल उठें हों।
अँधेरे में यूँ जगमगाती किताबें।।

'भरत दीप'
आगरा

मैं मस्त फकीर

मैं मस्त फकीर
मेरा कोई नहीं ठिकाना
मुझे नहीं पता
कल कहाँ जाना?

अपनों ने मुझे भुलाया
मैंने भी अपनों का मोह मिटाया।
छोड़ के सारा झमेला,
मैं चला अकेला।।

मान मिले या अपमान मिले
सब मन से स्वीकारुंगा
इस झूंठे संसार में रहके
धूनी कहीं रमाऊंगा?

धन–दौलत का साथ मिले
पल दो पल का
मैं सृष्टि रचईया के गुण गाऊंगा,
उसकी भक्ति में ही पागल हो जाऊंगा।

जग की चालों से बिल्कुल उलटा चलकर
राह नई बनाऊंगा
मैं निबलों–बिकलों का बनकर सहारा
मानव धर्म निभाऊंगा।।

–मुकेश कुमार' ऋषि' वर्मा
आगरा

''एक पीर सावन की ऐसी भी''

मुझे कुछ उदास
नहीं लिखना आज
तो क्या के
मटमैला सा ये आसमान
मन को कचोट रहा है...

सावन की हरियाली ही
निहारुँगी मैं
नहीं देखना वो सूखा चेहरा
जो डबडबाती आँखों से
इसे देख रहा है ....

पी के गीत सुनने हैं
मल्हार गानीं हैं
उस रुदन से क्या मुझे
जो हाट सिमटी माँ का
हृदय रो हा है .....

तापिश रुमानी हुए मौसम में
बस जज्बातों की दर मायने है
वो तपिश किस काम की
जिसमें किसी गरीब का
कोई चिराग बुझ रहा हैं .....

हाँ, नहीं लिखना कुछ उदास
मुझे आज
तो क्या के मटमैला ये आसमान
मन कचोट रहा है !!!

नेहा अग्रवाल ''तमन्ना ''
आगरा

वीर जवान

हे! भारत के वीर जवान,
मैं करता तुमको प्रणाम ।
प्राण न्यौछाबर करके तुम तो,
मातृभूमि के आते काम ।।

शपथ–पत्र जब भूल चुके सब,
तुमने शपथ निभाई है।
रणभूमि में नहीं कभी भी,
तुमने पीठ दिखाई है।
सर्वप्रथम तुम हिन्दुस्तानी ,
और बाद में अब्दुल–राम ।।
हे! भारत के वीर.....।।
कहलाता है पाक मगर,
नापाक इरादे रखता है।
हिंसा जिसका दीन–धर्म,
हिंसा को साधे रखता है।
इस हिंसक प्राणी का तुम ही,
कर सकते हो काम तमाम।।
हे! भारत के वीर.....।।

है संकल्पित बच्चा–बच्चा
मातृभूमि के लिए यहाँ।
शत्रु के संहार हेतु है,
जन–जन में उत्साह यहाँ।
द्वापर के कृष्ण भी तुम हो,
और तुम्हीं त्रेता के राम ।।
हे! भारत के वीर.....।।

....गिरीश 'अश्क' जनकवि
आगरा

हार को हार मानकर मत बैठिए, हार भी जीत का हार पहनायेगी।
आज हमको पराजय जो हैं लग रही, कल वही तो बड़ी जीत बन जायेगी।

क्या हुआ जो हमें थोड़ा रुकना पड़ा, पाँव थकने लगे राह मुड़ना पड़ा।
हमसे अपने सभी हो गये दूर, और जो थे बैरी हमें उनसे जुड़ना पड़ा।
ये भी होता है जब राह चलते हैं हम, जो चला ही नहीं पीर जानेगा क्या?
यूँ अकारण भी बैरी बनेंगे बहुत, अपना जो ना हुआ अपना मानेगा क्या?
आज है जो अधूरा वही गीत, कल सारी धरती स्वंय साथ में गायेगी।।
आज हमको पराजय जो है लग रही, कल वही तो बड़ी जीत बन जायेगी।।

हार से मंत्र हम सीखते हैं बहुत, कौन अपना विभीषण हुआ साथ में।
कोई रुठा हुआ अपने द्वंदी से मिल, काम करने लगा हाथ दे हाथ में।।
अर्थ का अर्थ कोई लगा व्यर्थ में, फिर किसी हार का हार बुनता ना हो।।
झूठ के द्वार पर वो रगोंली सजा, भोले भालों के हृदयों को चुनता ना हो।।
आज सूरज भले सांझ में ढल गया, कल नयी भोर जीवन को मँहकायेगी।।
आज हमको पराजय जो है लग रही, कल वही तो बड़ी जीत बन जायेगी।

डा, रुचि चतुर्वेदी
आगरा

एहसास

मुझे क्या हो रहा मुझे नही पता।
तुम्हारा रोज सपनो में आना।
नीदों का खुल जाना।
फिर मैसेज को पढ़ना
घण्टों मैसेज का इंतजार करना
जाने कैसा रिश्ता बुनता जा रहा
मैं उलझ गई हूँ इसमें।
मुझे क्या हो रहा मुझे नहीं पता।
तुम्हारा अपने पन का एहसास।
मुझे बहुत अच्छा लगता है।
तुम्हारा रेशमी एहसास
चेहरे को गुलाबी कर देता है।
तुम्हारा हल्का सा स्पर्श
मुझे रोमांचित कर देता है।
तुम्हारा आस–पास न होना।
मेरी बैचेनी को बढ़ा देता है।
तुम्हारा मैसेज देर से आना।
मेरे गुस्से को बढ़ा देता है।
मुझे क्या हो रहा मुझे नहीं पता।

डा. राखी अस्थाना
आगरा।

जीवन के प्रहर

दिन का प्रथम प्रहर जैसे
लाल सूर्य को लेकर आता
सिन्दूरी से रंग मे धरा का तम हर ले जाता
मानव जीवन का प्रथम प्रहर भी
लाल सुलभ किलकारी से खिलखिलाता
घर आँगन को महकाता
न चिन्ताएँ होती मन में
हँसता–गाता–खेल क्रीड़ा करता
बचपन अपना रंग दिखाता
बात–बात पर रुठ जाता
अपनी हर हठ मनवाता जाता
बस्ता लेकर पढ़ने जाता
विद्या अर्जित करता जाता
दिन के दूजे प्रहर में
जब धूप चटख कुछ हो जाती
जीवन में भी उमंगो की
मस्ती सी छाती जाती
बचपन बीता आया यौवन
मोह–माया के जाल में यह
मन फँसता जाता
उपवन सी लगती यह दुनिया
फूल सुगन्धित भरमाते हैं
भौंरे सा बन जाता है मन
कुछ नई–नई चाहें लेकर
कुछ कर गुजरने का जज्बा
हौंसले बुलन्द करता जाता
जैसे पंछी वापिस आते सन्ध्या को
जब सूरज ढ़लने लगता है
जीवन–सागर में आया था
जो ज्वार उतरने लगता है।
दुनिया के प्रपंचो से मानव का,
हटने सा लगता है मन
शांति की खोज करता
काम से रिटायर होता तन
पूजा–पाठ में मन रमता
अनुभवों का पाठ पढ़ाता मानव
जब वृद्धावस्था है आती
क्लान्त्र तन–मन से जीवन
से हार जाता मानव
प्रथम प्रहर में तू खेला–खाया
दूजे प्रहर मस्त होकर देखा
दुनिया का मेला
प्रहर तीसरा ढलने लगी तेरी उमर
शिथिल होते तेरे चरण
स्वंय को अपने अस्तित्व को न
भूल मानव
विचार कर तू कौन है क्यों आया
धरा पर कहाँ तुझे है जाना
जाने से पहले उस सृष्टिकर्ता
की सृष्टि का ऋण अवश्य उतार जाना।

नीता दानी
आगरा

अंतहीन दौड़

हम दौड़ रहे है,
अंतहीन सफर की राह में,
जाने किस चाह में।
दुख: में दुखी होने के लिये,
सुख में मग्न रहने के लिये,
नहीं छोड़ा है, तनिक भी समय।
बस पिए जा रहे है,
खुशी और गम के प्याले,
आधे पूरे निवाले।
लक्ष्य अस्पष्ट है,
तन–मन त्रस्त है,
चेहरों पर अलग सी ऊबासी है,
आखिर हमारी चाहत किसकी दासी है।
छोटा परिवार,
फिर भी सुखी नही घर–द्वार,
मृग तृष्णा का भवर,
लिये जा रहा है, जाने किधर।
विषय चिंतन का है,
लेकिन चिंतन का समय नही,
विषय मनन का है,
लेकिन मनन के लिये समय नहीं।
समय है तो बस,
दौड़ के लिये,
जिसका कोई अंत नहीं।

अजय शर्मा'रंगीला'
आगरा

गजल सृजन काफिया (तुकांक)

आऊँ रदीफ – कैसे

तुझसे दूर होकर कभी जाऊँ कैसे
अपनी हसरतों को छुपाऊँ कैसे।

सीं लिए होंठ हमनें तुम्हारी खातिर
वो जख्म किसी को दिखाऊँ कैसे।

शिकवा रहेंगा तुम्हें सदा इस बात का
सच के पलड़े में झूठ बिठाऊँ कैसे।

बहुत मुश्किल है नेक राह चलना
डगमगाती किश्ती मेरी ठहराऊं कैसे।

समय लगेगा पुराने जख्म भरने को
जख्मों पर फिर चोट खाऊँ कैसे।

बहुत लम्बा सफर है दीपक तेरा
रास्ते का पता नहीं जाऊँ कैसे।

'दीपक कुमार' कालकाजी
नई दिल्ली

घायल घाटी

घायल घाटी चीख रही है, पीर जिगर के पार हुई,
कुछ अपनों की करतूतों से, भारत माँ बेजार हुई।
रोग बसाकर दामन में, अपने ही बेटे चले गए,
देकर पानी खाद दर्द को,भारतवासी छले गए।
जब तक हैं जयचंद सलामत, चौहानों की हार हुई।
घायल घाटी चीख रही है, पीर जिगर के पार हुई।
वतन सौंप दो सेना को, तुम सदनों में आराम करो,
खुले हाथ हों सेना के भी, कोई तो ऐसी शाम करो,
आज शहादत वीरों की इतनी क्यों लाचार हुई।
घायल घाटी चीख रही है, पीर जिगर के पार हुई।
तीन सौ सत्तर खत्म करो, ये काम बहुत जरुरी है,
लिए बैठे लाशें कंधों पर, ऐसी क्या मजबूरी है।
कफन बाँध लो सर पर अपने, अब तो हद सरकार हुई,
घायल घाटी चीख रही है, पीर जिगर के पार हुई।
पी. ओ. के. को वापस लाओं, वीरों अब हुंकार भरो,
गांडीव का गौरव हो तुम अर्जुन सी टंकार करो।
शांति वार्ता की तो कोशिश, हर बार यहाँ बेकार हुई।
घायल घाटी चीख रही है, पीर जिगर के पार हुई ,
कुछ अपनों की करतूतों से,भारत माँ बेजार हुई।।

'मंजु यादव ''ग्रामीण''
आगरा

आधुनिक भारत के निर्माता
सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल के विषय में स्व.मौलाना शौक़त अली ने एक ही वाक्य में उनके व्यक्तित्व का पूर्ण वर्णन करते हुए कहा है कि, ''सरदार वल्लभभाई पटेल बर्फ में ढँकी हुई ज्वालामुखी है'' दिखने में तो वे बर्फ की तरह शीतल और शांत है परन्तु प्रसंग आने पर उनकी उग्रता और रणनीतिज्ञ वृत्ति उनके वास्तविक रुप की झाँकी दिखाती है। जीवन की यह खूबी उन्हें उनके पिता की ओर से विरासत में मिली थी। वल्लभभाई का पूरा लम्बाई वाला शरीर, मजबूत कद–काठी, स्पष्ट वक्तव्य, उनकी इस संग्राम में सरदार के रुप में यथार्थता दर्शाती है।

सरदार वल्लभाई पटेल का जन्म खेड़ा जिले के करमसद गाँव के एक साधारण लेकिन सुखी किसान परिवार में हुआ। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 की रोज हुआ था। उनके पिता श्री झवेरभाई के वल्लभभाई सहित 4 पुत्र और एक पुत्री थे। झवेरभाई एक देशदर्द से भरे हुए व्यक्तित्व थे। उनके संस्कार वल्लभभाई में भी आए थे। माता–पिता के सयंम सादगी आदि गुणों का प्रभाव वल्लभभाई के लालन–पालन पर हुआ। सत्य और दृढ़ता उनमें मुख्य थे। विद्यार्थीकाल में वल्लभाई में शूर वृत्ति, घोर परिश्रम के साथ ही नेतृत्व गुण खिलते रहे। उन्होंने सन 1900 में डिस्ट्रिक्ट परीक्षा उत्तीर्ण की और वकालत की शुरुआत गोधरा से की। सन 1905 में विदेश जाकर 1908 में बैरिस्टर की पदवी लेकर वापस लौटे थे। उनके स्पष्ट जीवन का प्रारंभ गुजरात सभा द्वारा हुआ। 1915 में गुजरात सभा के सदस्य बने। गुजरात सभा की पहली राजकीय परिषद की जो कार्यवाहक समिति बनवाई उसमें वल्लभभाई मंत्री नियुक्त किए गए। तब से गाँधी जी के साथ उनके प्रत्यक्ष रुप से संपर्क और संबंध शुरु हुए। आगे चलने पर परिणाम यह हुआ कि उन्होंने वकालत छोड़ दी और तन मन, धन से देशसेवा के कार्यो में लग गए। गुजरात सभा में उन्होंन प्रथम सवाल उक्त समय में वर्तमान गलत प्रथा के विषय में उठाया और उस प्रथा को बंद कराया, उसके बाद अहमदाबाद जिले में प्लेग की महामारी के समय लोगों की सहायता करने का काम शुरु किया। इसके उपरांत 1917–18 में पड़े अकाल और गुजरात में फैले इन्फ्लुएन्जा के उपद्रव के समय भी उन्होंने लोगों की बहुत सेवा की। आम गुजरात सभा के संचालन के पीछे वल्लभभाई की कुशलता एवं नेतृत्व के गुण निखर रहे थे। उस समय खेड़ा के किसानों पर हुए अत्याचार का प्रश्न उपस्थित हुआ तब 'खेड़ा–लड़त गुजरात रभा' के सौजन्य से गांधी जी के साथ विचार–विमर्श करने के बाद '' मेरे साथ खेड़ा चलने के लिए कौन तैयार है?'' ऐसा गाँधीजी द्वारा पूछे जाने पर सर्वप्रथम स्वंय का नाम लिखवाने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल थे।

अप्रैल 1918 में वल्लभभाई ने गाँधी जी के साथ खेड़ा के गाँवो में किसानों को महसूल सत्याग्रह का संदेश दिया था। इस सत्याग्रह में वल्लभभाई ने जिस लगन और उत्साह के साथ काम किया उससे गांधी जी के मन पर उन्होंने सदा के लिए अधिकार कर लिया था। गाँधी जी ने अहिंसात्मक सत्याग्रह के लिए लोगों को तैयार करने के हुनर को उन्होंने प्राप्त कर गाँधी जी के कायमी और पूर्ण साथी बने रहे। सरदार पटेल एक भाषण में गाँधी के प्रति अहोभावना प्रकट करते हुए कहते हैं कि, ''मुझे कई लोग गाँधी जी का अंधभक्त कहते हैं, मेरी इच्छा है कि सचमुच मुझमे गाँधी जी के भक्त बनने की शक्ति आए, लेकिन मुझमें वो सामर्थ्य नहीं है। मैं तो एक सामान्य बुद्धि का दावा करने वाला हूँ, मुझमें शक्ति डली हुई है इसलिए समझे बिना मात्र पुतड़ित्रया पहनकर घुमक्कड़ों के पीछे पागल होकर घूमूं ऐसा नही हूँ। मेरे पास अनेकों को ठगकर धनवान बन जांऊ ऐसा व्यवसाय था लेकिन उसे छोड़ा क्योंकि मैंने मनुष्य से सीखा कि यह व्यवसाय लोगों का कल्याण नहीं कर पाएगा, इस जन्म में तो उनका संबंध टूटे ऐसा नहीं लगता।''

गाँधी जी सत्याग्रह के सिद्धांतो के द्रष्टा और रचयिता थे, तो वल्लभभाई सिद्धांतो के भाष्यकार और अन्हें व्यावहारिक तरीके से अमल में लानेवाले कर्मयागी थे। वहीं दूसरी ओर अमृतसर और जालियांवाला बाग में सरकार के अत्याचारों के कारण समग्र देश में चारों तरफ भारी रोष व्यापक हो गया था। कविवर टैगोर ने भी अपना खिताब वापिस लौटा दिया था। लोगों में असहमति के लिए जबरदस्त भावना फैल गई। भारतीय कांग्रेस ने सितंबर में आनेवाली धारासभा के चुनावों का स्पष्ट बहिष्कार किया। नागपुर कांग्रेस के अधिवेशन ने लगभग सर्वसहमति से असहकार का निर्णय स्वीकार्य किया और देशभर में एक वर्ष में स्वराज्य का नाद गूंजने लगा।

अंग्रेज सरकार ने बोरसद तालुका के लोगों पर असहा दंड का बोझ डाला। उसका विरोध हुआ और यह बात लोगों ने वल्लभभई से कही तब उन्होंने गहन जाँच कराई, बोरसद के लोगों की बात न्यायिक लगी। बोरसद सत्याग्रह शुरु करके लोगो को अहिंसक रहकर विरोध करने और दंड ना भरने का अनुरोध किया। उस समय वल्लभभाई एक महीने तक बोरसद तालुका के गाँव में घूमे और लोगों को हिम्मत दी। सत्याग्रह पूर्ण किया और प्रजा के निवेदन में वल्लभभई ने बताया था कि, ''सत्य, अहिंसा और तप पुनः एक बार विजयी हुए हैं। यह विजय, हमारी लड़ाई जितनी न्याय की थी, उतनी ही त्वरा से हुई है।''

बोरसद में सत्याग्रह के विजय से सरदार की श्रद्धा सत्याग्रह में अधिक हढ बनी। उनकी विजय के स्वागत में अनेकों संदेश और अभिनंदन दूर–दूर से प्राप्त हुए। सरदार को राष्ट्रीय नेता स्वीकार करने वाले निम्नलिखित कितने ही विधान ध्यातव्य हैं।

बारडोली सत्याग्रह 1921 में महात्मा गांधी जी की अगुवाई में स्वतंत्रता आंदोलन के लिए बारडोली को पसंद किया गया था। मुंबई सरकार के नियमानुसार 1925महसूल सुधार का प्रश्र आते ही महसूल में 30%की वृद्धि जाहिर की गई। इससे बारडोली के सत्याग्रही अनुवाई वल्लभभाई से मिलने आए। इस सत्याग्रह में उन्हें गांधी जी का आशीर्वाद प्राप्त था इससे उनमें और उत्साह आया। सरदार ने लड़ाई में पुरुषों के साथ महिलाओं को जोड़ने का आग्रह किया। इस सत्याग्रह के कारण वल्लभभाई का नाम किसानों का सरदार पड़ा। वल्लभभाई ने अपनी बुलन्द वाणी में सरकार को चुनौती दी की, 1921 की राष्ट्र व्यापी सविनय कानूनभंग लड़ाई जिस वक्त बंद थी वह आज शुरु हो रही है। इस लड़ाई का विषय राष्ट्र की स्वतंत्रता का विषय है तब सूरत के कलेक्टर बारडोली की स्थिति का जायजा लेने निकले थे और उन्हें ये संगठित विरोध और मजबूत लोगों की लड़ाई का ख्याल आया और ब्रिटिश संसद में भी उसके परदे गिरे। गांधी जी ने वल्लभभाई को इस लड़ाई में सफल संचालन के कारण सरदार की पदवी और तब से सरदार पटेल देशभर में राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश हो चुके थे। देशभर के आन्दोलनकारियों के अभिनंदन की वर्षा सरदार के ऊपर हो रही थी।

बोरसद और बारडोली सत्याग्रह में सरदार शुद्ध स्वर्ण के रुप में बाहर आकर लोंगों के दिल में बस गए। उसके बाद गांधी जी ने नमक का कानून तोड़ने के लिए तारीख 12 मार्च 1930 की रोज दांडी गाँव से सत्याग्रह करने का विज्ञापन दिया। सरदार पटेल ने सत्याग्रह और दांडी कूंच के मार्ग में आनेवाले गाँवो में पुनः लोगों को समझातें हुए उन्हें तैयार रहने की प्रेरणा देते तब सरदार पटेल की धरपकड़ हुई और

उन्हें जेल की सजा दे दी गई। लाखों लोगों ने वल्लभभाई के दिखाए मार्ग पर चलने की एवं स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा ली। ई.स. 1931 में मार्च में कराची में आयोजित कांग्रेस के 48वें अधिवेशन में मुख्यत:सरदार पटेल चुने गए

इस के उपरान्त मैसूर, राजकोट, वड़ोदरा, लीम्डी, भावनगर जैसे प्रजाकीय आन्दोलनों में भी उन्होंने नेतृत्व किया था। इन देशी राज्यों के मुकाबले के दौरान वड़ोदरा, राजकोट और भावनगर में उनपर जानलेवा हमले हुए थे लेकिन सरदार उससे डरे नहीं। 1938 की रोज अहमदाबाद में देश के राज्यों के प्रश्नों के प्रति एक जाहिर सभा का आयोजन हुआ जिसमें उनके द्वारा दिया गया व्याख्यान स्मरणीय है। सरदार श्री ने कहा कि. ''मैं बहुत समय से मेरे ऊपर के कर्ज से उऋण होना चाहता था। राजकोट ने, काठियावाड़ ने एक ऐसे पुरुष की भेंट दी है जिसे सैकड़ो वर्षो से सोए हुए देश को सत्य और बलिदान का पाठ पढ़ाकर जागृत किया ऐसे उस पुरुष का मैं सिपाही हूँ, मेरे ऊपर उनका ऋण चढ़ा है, वो ऋण कुछ मैंने हल्का किया है इसका मुझे संतोष हो रह है।''

वही उमाशंकर जोशी ने सरदार के विषय में एक काव्य में सरदार की वाणी को उनके भाषण ने ''आग उगलते शब्दों का उद्भव स्थान'' कहकर उनकी वाणी–भाषण की ताकत शब्दों में मापते हुए दर्शाया है कि–''धारदार शब्द घाव करने में भी रचते हैं लेकिन अभी अभी तो उनकी आत्मा की गोफन में से छूटते हैं – शब्द नहीं, लेकिन संकल्पशक्ति उनके शब्द नहीं, कार्य हैं''। गाँधी जी और सरदार जैसे नेताओं ने अँगरेज लोगों ने मुझ मिस्टर छोटे के हठ के सामने भी ढील नहीं दी और अंत में अंग्रेजों ने भारत छोड़ के विदाई ली यह ऐतिहासिक और अंतर्राष्ट्रीय घटना थी।

राज्यों के विलयन का प्रारंभ काठियावाड़ प्रदेश से शुरु हुआ। उस समय काठियावाड़ में 74 सलामी राज्य 191 छोटे रजवाड़े और 449 अन्य छोटे राज्य थे, सब राज्यों का संघ बनाना और उसका उदघाटन सरदार पटेल के हाथों किया गया।

आजादी का सुनहरा सूरज उदय होकर मुश्किल से क्षितिज पर आया ही था कि साम्प्रदायिक तूफान में देश जकड़ा गया। सरदार दूरदर्शी थे इससे उनको लगा कि इस समस्या का समाधान निराकरण भारत–पाकिस्तान के विभाजन से ही होगा। वे कहा करते कि संपूर्ण शरीर में जहर फैले उससे पहले सड़े हुए भाग का ऑपरेशन कर लेना ही उसके बचाव का उसली उपाय है लेकिन देश के विभाजन के इस निर्णय से गाँधी जी को आघात लगा। तारीख 25 अगस्त लार्ड माउंट बैटन भारत के गवर्नर जनरल बने और मोहम्मद अली जिन्ना को पकिस्तान का गवर्नर बनाया।

13 नवंबर 1947 की रोज सरदार पटेल सौराष्ट्र में आए तब सोमनाथ के दर्शन के लिए गए। सोमनाथ के प्राचीन मंदिरों के खँडहर देखकर सरदार का भावुक हदय द्रवित हो उठा और उन्होंने सागर किनारे जल की अंजुली भरकर भगवान सोमनाथ के मंदिर के नवनिर्माण का संकल्प लिया। और भव्य मंदिर की रचना शुरु कराई। उसकी प्राण प्रतिष्ठा का सुभारंभ 11 मई 1951 की रोज कराया। कई लोग उन्हें लौह पुरुष तो कई उन्हें जोश भरी जुबान वाले नेता के नाम से जानते थे। कहा जाता है कि सरदार पटेल नारियल की तरह बाहर से सख्त और अंदर से फूलों से अधिक कोमल, कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सरदार जी ने विशिष्ट भूमिका निभाई थी। सरदार पटेल A man of action, साधारण किसान और जिसका culture Agriculture है ऐसे सरदार पटेल उनके द्वारा किए गए कर्म से ही महान बने – आधुनिक राष्ट्र के निर्माता सरदार पटेल!

संजय चौधरी 'आर्य'
आगरा

भौंपू का प्रयोग कितना आवश्यक ?

धर्म + कल्याण, परोपकार आदि।
धर्म + भौंपू (लाउडस्पीकर) = केवल अधर्म।

भारत में धर्म की परंपरा अति प्राचीन है। धर्म की अनेक व्याख्याएँ यहाँ हुई हैं। अभी भी अनेक धर्मशास्त्री उन्हीं धार्मिक व्याख्याओं को उसी रुप में घोंट–घोंटकर पिलाते रहते हैं। समय के साथ जो परिवर्तन आवश्यक हैं, उन्हें वे नहीं करना चाहते। यहाँ तक कि समय के साथ जो बुराइयाँ इसमें शामिल हो गई हैं, उन्हें भी समाप्त करने की मुहिम नहीं छेड़ते। बल्कि सच तो यह है कि वे स्वंय इन बुराइयों के सूत्रधार हैं।

भारत में धर्म का अर्थ है कि किस प्रकार से उसे मानने वाले या न मानने वालों को तकलीफ पहुँचाई जाए? अनुयायियों को कैसे मूर्ख बनाया जाए और जो न माने, उन्हें कैसे प्रताड़ित किया जाए? किस प्रकार आम जनता की नाक में दम किया जाए?

क्या किसी भी धर्म के किसी भी शास्त्र में भौंपू (लाउडस्पीकर) के विषय में कहीं भी कुछ कहा गया है?
नहीं।

कारण सीधा–सा है कि भौंपू का आविष्कार अधिक पुराना नहीं है। लेकिन जब हम यह मानते हैं कि धर्म को प्राचीन शास्त्रों में बताए हुए नियमों के द्वारा ही अपनाना चाहिए तो भौंपू जैसी नई और व्यर्थ वस्तु का इसमें समावेश क्यों कर दिया गया?

भारत भर में प्रतिदिन हजारों जागरण होते हैं, चौकियाँ आदि लगती हैं। सैंकड़ों कथाएँ चलती रहती हैं। इन सभी में भौंपूओं का प्रयोग आवश्यक रुप से होता है। कोई दिक्कत नहीं है। सैंकड़ों–हजारों की संख्या में आए हुए श्रोताओं तक आवाज पहुँचाने के लिए इसका प्रयोग आवश्यक भी है। किंतु क्या साथ ही साथ यह ध्यान रखने की जरुरत नहीं है कि इनकी आवाज इस सीमा तक ही रहे कि जागराण, चौकी और कथाओं के क्षेत्र से बाहर न जाए? रिहाईशी क्षेत्रों से दूर स्थित पार्क और बड़े मैदान आदि में होने वाले ऐसे कार्यक्रम से कोई दिक्कत नहीं होती, किन्तु रिहाईशी क्षेत्रों में होने वाले ऐसे कार्यक्रम तो आस–पास रहने वाले सभी लोगों को दिक्कत पहुँचाते हैं।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे आदि में सुबह–सुबह बजने वाले भजन, अजान और सबद–कीर्तन आदि, मुझे नहीं पता कि कितने लोगों को धर्म की ओर प्रवृत्त करते हैं, किंतु यह निश्चत है कि इससे अनेक लोगों को हानि पहुँचती है। बीमार, वृद्ध और पढ़ाई करने वाले बच्चों तथा बड़ों को इससे केवल व्यवधान ही मिलता है, लाभ तो बिलकुल नहीं पहुँचता। न तो सरकार इस ओर कोई ध्यान देती है और न ही अदालतें। धार्मिक मामला होने के कारण पुलिस भी ज्यादा कुछ नहीं कर पाती। मंदिर तो हर गली में 2–3 होते हैं। एक धार्मिक पुजारी में इतनी भी बुद्धि नहीं होती कि सुबह–शाम जो शोर वह मचा रहा है, उससे कितने लोगों को परेशानी झेलनी पड़ती होगी।

आज का समय बहुत अलग हो चुका है। शहरीकरण बढ़ रहा है। पहले वाली बात नहीं है कि लोग शाम को खाना आदि खा–पीकर 7–8 बजे तक सो जाते थे और सुबह 5 बजे उठ जाते थे। आज समय बदल गया है।

लोगों के काम–धंधे बदल गए हैं। केवल खेती–बाड़ी का काम नहीं है। लोग शिफ्टों में काम करते हैं। किसी को रात में ड्यूटी पर जाना है तो कोई दुपहर में ड्यूटी से लौटता है। पढ़ाई से जुड़े लोग भी रात भर जागकर पढ़ते है या अन्य काम करते हैं।
बच्चों को लिए भी हालात बदल चुके हैं। पहले वाली बात नहीं है कि केवल पास होने की चिंता हो। 100 में से 100 ही चाहिए और यह दबाव उन्हें रात–दिन पढ़ने पर मजबूर करता है।
लेकिन ऊपर बताई गई दोनों ही स्थितियों में वे आराम से अपना काम नहीं कर सकते। आराम नहीं कर सकते। क्योंकि हमारे धार्मिक महापुरुष सुबह–सुबह और शाम को भौंपू जरुर बजाएँगे। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो बेचारे पाप के भागी बन जाएँगे और उन्हें नर्क में भी स्थान नहीं मिलेगा। इसलिए कर्तव्यनिष्ठ होकर भौंपू की सीडी लगा देते हैं। बेशक खुद सुनें या ना सुनें, लेकिन पूरे मौहल्ले को जरुर सुनाएँगे।

यही हाल जागरण आदि करने वालों का है। बेशक स्वयं कितने भी बड़े पापी हों, किंतु भौंपू की सहायता से प्रवचन अवश्य देंगे। मैं साधिकार यह बात कह सकता

हूँ, क्योंकि मैं स्वयं ऐसे पापियों को जानता हूँ जो भजन आदि करके जनता के समक्ष साफ छवि रखने का प्रयास करते हैं। अनेक पापी तो जेल भी जा चुके हैं। उन्हें तो सारा देश जानता है।

खैर, यह अलग विषय है। मुख्य विषय यह है कि भौंपूओं की आवश्यकता क्यों? मैंने कहीं पढ़ा है कि हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि ईश्वर के नाम या ईश्वर के भजन का एक अक्षर भी कान में पड़ जाए तो जीवन सफल हो जाता है। सच–झूठ को अलग करते हैं, और इसे मान लेते हैं। लेकिन मानने के बावजूद यह निश्चित है कि वह अक्षर तभी फलीभूत होता है, जब व्यक्ति स्वंय उसे सुनना चाहे। प्राचीन काल में भी कथा आदि होती थी। वनादि में ऋषि–मुनि सुनाते थे। ब्राह्मण कथा–वाचन करते थे। लोग उन्हें सुनने जाते थे। उस प्रक्रिया में किसी भी ऐसे मनुष्य को कोई समस्या नहीं होती थी, जो उसे नही सुनना चाहता हो।

लेकिन अब ऐसा नहीं है। बेशक कोई बेचारा नौकरीशुदा रात की ड्यूटी करके सुबह 5 बजे घर वापिस आकर सोना चाह रहा हो, लेकिन सो नहीं सकेगा। क्योंकि पड़ोस के किसी धार्मिक स्थल से कोई भौंपू बज उठेगा और उसकी नींद हराम कर देगा।

कोई शिक्षार्थी रात को बैठकर अपनी परीक्षा की तैयारी कर रहा होगा कि शांति से पढ़ सकेगा। लेकिन नहीं ऐसा नहीं हो सकेगा, क्योंकि उसके पड़ोस में एक अति धार्मिक व्यक्ति की श्रद्धा भगवान में उमड़ चुकी होगी और उसने अपने घर की छत पर एक जागरण करवाया होगा, ताकि उसके सभी पाप धुल जाएँ और जागरण का अर्थ है––भौंपू पर जोर–जोर से गला फाड़ना।

एक बीमार व्यक्ति सारी रात सो नहीं सका। दवा लेकर उसे दिन में थोड़ी–सी नींद आई है, कि तभी उसकी नींद खुल गई। क्योंकि पड़ोस में किसी धार्मिक व्यक्ति ने घर की शुद्धि के लिए हवन और रामायण पाठ रखवाया है और वह तभी सफल हो सकता है, जब भौंपू पर जोर–जोर से सबको बताया जाए कि उसके घर में धार्मिक कार्य का आयोजन हो रहा है। 24 घंटे वह भौंपू बजता रहेगा और वह व्यक्ति राम का नाम लेकर पड़ोसी को कोसता रहेगा। बल्कि हो सकता है कि कोस भी न सके क्योंकि होगा तो वह भी धर्मभीरु ही। भला भगवान् के काम में हस्तक्षेप कैसे कर सकता है?

अब बचे वे लोग, जो स्थिति को सही ढंग से समझते हैं। धर्म की वास्तविकता को समझते हैं, धर्म को समझते हैं। ये लोग संख्या में बहुत ही कम होते हैं। ये लोगों को समझाते हैं, किंतु अधार्मिक कहलाते हैं। ये पुलिस में शिकायत करते हैं तो लोग नाराज हो जाते हैं और इन्हें पापी कहने लगते हैं।

तो यह है भारत में धर्म की स्थिति। ध्यान दीजिए कि केवल उदाहरणों पर न जाएँ और इसे हिंदु–मुस्लिम न बनाएँ। सभी धर्मो का यही हाल है। अपनी सुविधानुसार धार्मिक स्थल का नाम रख सकते हैं।

लेकिन मूल प्रश्न यह है कि क्या यह स्थिति सुधर नहीं सकती? क्या बिना भौंपू के हम धार्मिक नहीं रह सकते। क्या हमारा धर्म इतना कमजोर है कि बिना भौंपू के उसकी कोई हैसियत नहीं रहेगी, कोई अस्तित्व नहीं रहेगा?

भौंपू जरुरी है, यह मान लेते हैं। लेकिन क्या उसकी आवाज इतनी तेज रखनी जरुरी है, जितनी रखी जाती है?
क्या केवल साधारण माइक से काम नहीं चल सकता, जिसकी आवाज उतनी ही दूरी तक रहे, जितने में श्रोता बैठे है,?
क्या भौंपू का मुँह बाहर की ओर रखना जरुरी है?
क्या मंदिर–मस्जिद, गुरुद्वारा आदि धार्मिक स्थलों में सुबह–शाम भौंपू का प्रयोग नहीं होगा तो उनकी विश्वसनीयता कुछ कम हो जाएगी?
क्या धार्मिक व्यक्तियों को अपने धर्म पर इतना भी विश्वास नहीं है कि बिना भौंपूओं के प्रयोग के भी उनका धर्म–स्थल वैसा ही पवित्र रहेगा?

इस लेख का उद्देश्य केवल इतना ही है कि समय के साथ चलते हुए, बेशक हम अपनी धार्मिक भावनाओं को प्रकट करने के लिए आधुनिक यंत्रों का प्रयोग करें, किंतु यह हमेशा ध्यान रखें कि हम सामाजिक प्राणी हैं। समाज में केवल हम ही नहीं रहते, अन्य लोग भी रहते हैं। उनकी सुविधा का ध्यान रखना भी हमारा ही कर्तव्य है।

अतः भौंपू जैसी बकवास वस्तु का प्रयोग करना ही है तो उसकी आवाज केवल इतनी ही रखें कि धार्मिक– स्थल के प्रांगण से बाहर न जाए।

तथाकथित अधामिर्क लोग जो स्वंय को धामिर्क समझते हैं, उन्हें यह बात समझ में नहीं आएगी, इसलिए जरुरी है कि जिन लोगों पर कानून–व्यवस्था का उत्तरदायित्व है, वे इस बात का ध्यान रखें और समाज को व्यर्थ के ध्वनि–प्रदूषण से बचाएँ।

अंत में तथाकथित धार्मिक लोग यह जरुर ध्यान रखें कि जो सनातन धर्म हजारों वर्षो बिना भौंपूओं की आवाज के जीवित है, वह आगे भी बिना भौंपू की आवाज के जीवित रह सकता है।

जयप्रकाश 'विलक्षण'
दिल्ली

तिरुपति बालाजी मंदिर

तिरुपतिबालाजी मंदिर पृथ्वी पर सबसे लोकप्रिय मंदिर हैं, यहाँ अनेकों श्रद्धालु प्रतिदिन आते हैं। यह एक आध्यात्मिक स्थान है। यहाँ का आकर्षण कई भक्तों को यहाँ आने के लिए आमंत्रित करता है और दैनिक आधार पर उनके द्वारा सबसे अधिक दान की राशि दान में दी जाती हैं इस प्रकार लाखो श्रद्धालु यहाँ दान पुण्य करते हैं। श्री बालाजी मंदिर या श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर को हिंदू शास्त्रों द्वारा गौरवशाली ढंग से वर्णित किया गया हैं, इस मंदिर को ''टेम्पल ऑफ 7 हिल्स'' भी कहा जाता है। तिरुमाला नगर 26.75 किलोमीटर के क्षेत्र में बसा हुआ है।

लोगों का ऐसा मानना है कि भगवान कालि प्रचीन युग मे यहाँ पर आने वाली मुश्किलों और क्लेश के चलते वे मानवी जीवन को बचाने के लिये अवतरित हुए थे। यह आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में एक शानदार स्थान है।

कहते हैं कि कलयुग के दौरान भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए भगवान पृथ्वी पर प्रकट हुए थे। एक बार ऋषि भृगु यह मूल्यांकन करना चाहते थे कि पवित्र तीन देवताओं में कौन सबसे बड़ा है।

प्राचीन कथा के अनुसार एक बार महर्षि भृगु बैकुंठ पधारे और आते ही शेष शैय्या पर योगनिंद्रा में लेटे भगवान विष्णु की छाती पर एक लात मारी। भगवान विष्णु ने तुरंत भृगु के चरण पकड़ लिए और पूछने लगे कि ऋषिवर पैर में चोट तो नहीं लगी। लेकिन देवी लक्ष्मी को भृग ऋषि का यह व्यवहार पसंद नहीं आया और वह विष्णु जी से नाराज हो गयीं। नाराजगी इस बात से थी कि भगवान ने भृग ऋषि को दंड क्यों नहीं दिया।

नाराजगी में देवी लक्ष्मी बैकुंठ छोड़कर चली गई। भगवान विष्णु ने देवी लक्ष्मी को ढूंढ़ना शुरु किया तो पता चला कि देवी ने पृथ्वी पर पद्मावती नाम की कन्या के रुप में जन्म लिया है। भगवान विष्णु ने भी तब अपना रुप बदला और पहुंच गए पद्मावती के पास। भगवान ने पद्मावती के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे देवी ने स्वीकार कर लिया।

अब धन कहाँ से आये तब विष्णु जी ने समस्या का समाधान निकालने के लिए भगवान शिव और ब्रह्मा जी को साक्षी मानकर कुबेर से काफी धन कर्ज लिया। इस कर्ज से भगवान विष्णु के वेंकटेश रुप और देवी लक्ष्मी के अंश पद्मावती का विवाह संपन्न हुआ, जो कि एक अभुतर्पूव विवाह था।

शादी के बाद भगवान तिरुमाला की पहाड़ियों पर रहने लगे, कुबेर से कर्ज लेते समय भगवान ने वचन दिया था कि कलियुग के अंत तक वह अपना सारा कर्ज चुका देंगे। कर्ज समाप्त होने तक वह सूद चुकाते रहेंगें। भगवान के कर्ज में डूबे होने की इस मान्यता के कारण बड़ी मात्रा में भक्त धन–दौलत भेंट करते हैं। ताकि भगवान कर्ज मुक्त हो जाएं।

तिरुपति बालाजी मंदिर में बालों का दान

भगवान के दर्शन करने से पहले श्रद्धालु अपनी प्रार्थनाओं और मान्यताओं के अनुसार यहाँ आकर भगवान् को अपने बाल भेंट स्वरुप देते हैं, जिसे मोक्कू कहा जाता है। मंदिर प्रबंधन ने लोगों को अपने बाल दान करने में मदद करने के लिए विशाल सुविधाओं का निर्माण किया है। रोज लाखों टन बाल इकट्ठे किये जाते हैं। रोज इन बालों को जमा किया जाता है और मंदिर की संस्था द्वारा इसे नीलाम कर बेच दिया जाता है।

तिरुपति बालाजी मंदिर महिमा

तिरुपति बालाजी मंदिर को भूलोक वैकुंठतम कहा जाता हैं–पृथ्वी पर विष्णु का निवास। इस प्रकार, यह माना जाता है कि भगवान विष्णु ने इस कालि युग के दौरान इस मंदिर में खुद प्रगट हुए थे ताकि वह अपने भक्तों को मोक्ष की ओर निर्देशित कर सकें।

दैनिक आधार पर, भगवान की मूर्ति, फूलों, सुन्दर कपड़े और गहनों से भव्य रुप से सजायी जाती है। इसके अलावा मंदिर में भगवान को सजाने के लिए

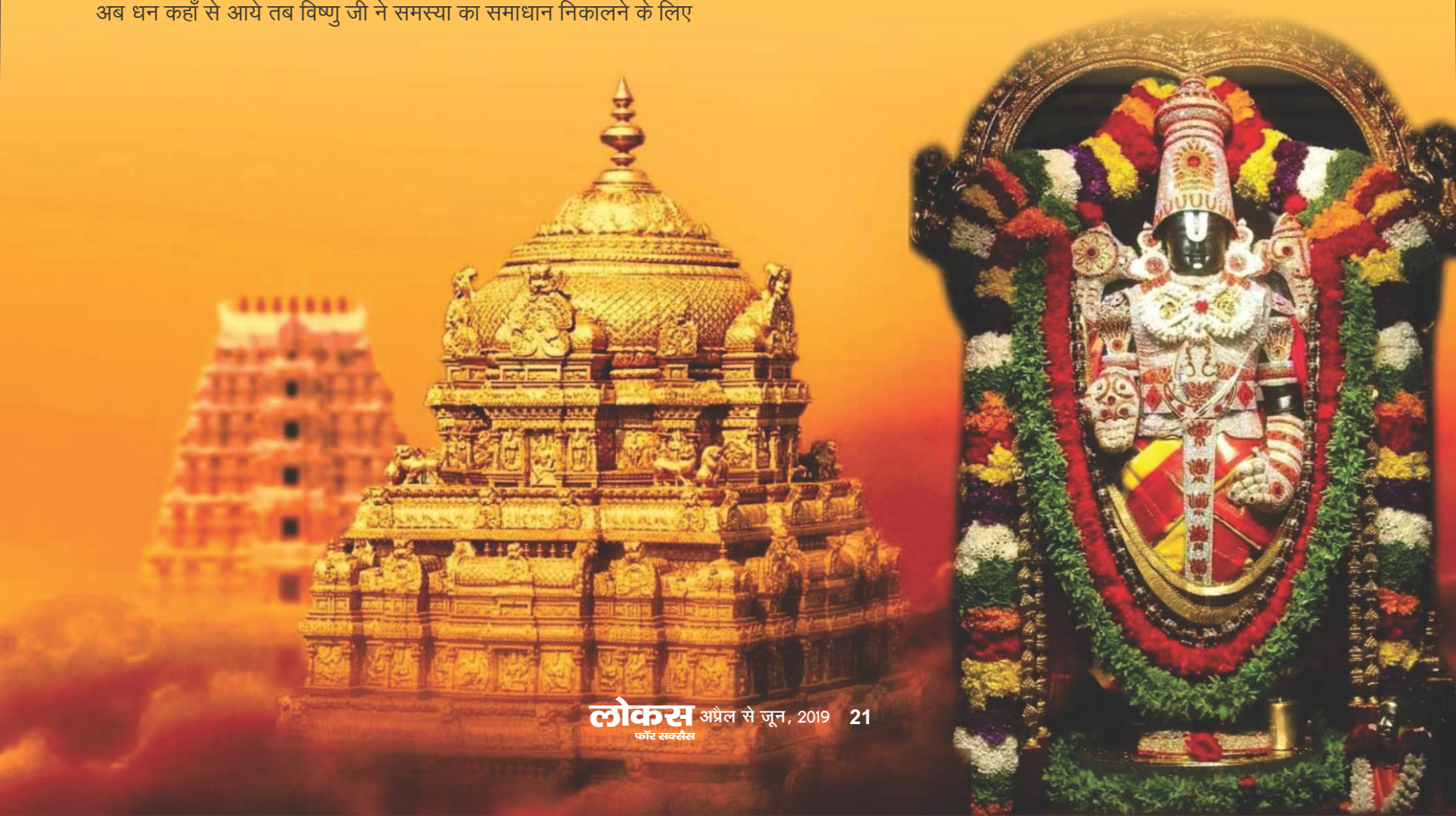

इस्तेमाल होने वाले सोने के गहनों के विशाल भंडार है।

वास्तुकला

वह स्थान जहां भगवान श्री बेंकटेश्वर की स्वंयम्–प्रकट (स्वैम्बु) प्रतिमा मन्दिर में स्थित है, उन्हें आनंद निलायम कहा जाता है। आनंद निलायम में श्रीनिवास की सुंदर मूर्ति भी मौजूद है। सुबह 'सुप्रभातसेवा' के दौरान, यह मूर्ति हटाकर मुख्य देवता के चरणों में रख दी जाती है।

भगवान वेकटेश्वर गर्भ गृह में पूर्व की तरफ मुँह करके खड़े हैं। इस मंदिर में पूजा करने की वैखनासा अगमा परंपरा को अपनाया जाता है। यह मंदिर 8 विष्णु स्वयंभू क्षेत्रों में से एक है और इसे धरती पर वेंकटेश्वर के बने मंदिरों में अंतिम मंदिर माना गया है।

तिरुपति बालाजी मंदिर का निर्माण 300 ईसवीं में शुरु हुआ, जिसमें कई सम्राट और राजा समय–समय पर अपने विकास के लिए नियमित योगदान करते थे। 18 वीं सदी के मध्य में, मराठा जनरल राघोजी भोंसले ने मंदिर की व्यवस्था करने के लिए एक स्थायी प्रबंधन की अवधारणा को आगे बढ़ाया

यह संकल्प और योजना तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टी.टी.डी) है जिसे 1933 में (टी.टी.डी) अधिनियम के माध्यम से विकसित किया गया था। आज, (टी.टी.डी) अपने सक्षम प्रबंधन के तहत कई मंदिरों और उनके उप–तीर्थो का प्रबंधन और रखरखाव करता हैं।

तिरुमाला पर्वतमाला अनोखी प्राकृतिक सुंदरता से संपन्न हैं।

पहाड़ियों के आसपास हरियाली और झरने है, यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यह दृश्य प्रेरणादायक और आनंद से भरपूर होता हैं। मंदिर में विभिन्न सुविधाएं आवास, बालों का दान के लिये, एक विशाल कतार परिसर में शामिल हैं, जो कि यहाँ भगवान के दर्शन के लिए आने वाले भक्तों के लिये आरामदायक और परेशानी मुक्त सुविधा प्रदान करते हैं, और मुफ्त भोजन की सुविधा वहां चारों पहर होती है।

मंदिर तक पहुंचने के मार्ग

तिरुपति बालाजी मंदिर आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित है। आज तिरुपति एक बेहद विकसित शहर है और बस और ट्रेन के माध्यम से भारत के प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

चेन्नई और हैदराबाद से इस शहर में जाने के लिए बहुत अच्छी सड़कों का निर्माण किया गया हैं। तिरुपति से, तिरुमला पहाड़ियों की ओर जाने वाला पूरा मार्ग, बसों और कारों में यात्रा करने वाले पैदल चलने वाले लोगों के लिए यह रास्ता पक्की सड़कों से बना है।

अर्श से फर्श वेनेजुएला

वेनेजुएजला काफी बड़ा देश है। लगभग हमारे उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा, बंगाल उड़ीसा के कुल क्षेत्रफल के बराबर.....

लेकिन जनसंख्या कितनी है? सिर्फ साढ़े तीन करोड़ .....यानि दिल्ली की कुल आबादी से भी कम.....

प्राकृतिक देन के रुप में यहाँ सब कुछ है। क्या शानदार उपजाऊ जमीन है, प्रचुर वर्षा होती है। सैकड़ों छोटी बड़ी नदियां है..... हजारों मील लंबा तो समुद्र तट ही है.....

इतनी उपजाऊ जमीन और इतना पानी होने के बावजूद देश में आज वो भुखमरी फैली है कि आदमी को आदमी मार के खा रहा है ..... देश में खेती किसानी, फल सब्जी, दुग्ध उत्पादन, मुर्गी–मछली पालन जैसा कुछ है ही नही। इतना बड़ा देश अपने लिए गेहूँ, चावल, सब्जी नही उगा सकता, लाखों वर्ग किलोमीटर के तो चारागाह हैं ..... ये नही की कुछ गाय, भैंस, भेड़, बकरी ही चरा ले मुल्क.....नदियों और समुंदर मे मछलियों की भरमार है वेनेजुएला फिर भी भूखा मर रहा है। मुद्रा स्फीति का ये हाल है कि बैग भर बोलिवर' यानि यहाँ की अधिकारिक मुद्रा भर के ले जाओ तो भी एक पाकिट ब्रेड का नही मिलेगा.... मुदास्फीति की दर पिछले साल की तुलना में 16,98,488% है।

आज आपको एक भारतीय रुपये के बदले में 3607 वेनेजुएला की मुद्रा 'बोलिवर ' मिलेगी।

आपको ये जान कर और आश्चर्य होगा कि वेनेजुएला में दुनिया के सबसे बड़े कच्चे तेल के भंडार हैं ..... सऊदी अरबिया से भी बड़े!

आपको ये जान कर भी आश्चर्य होगा कि आज से सिर्फ 20 साल पहले वेनेजुएला एक विकसित और संपन्न राष्ट्र था, पर इसके नेताओं की गलत नीतियों ने एक सम्पन्न राष्ट्र को सिर्फ 20 साल में भिखारी बना दिया।

आज ये हाल है कि वेनेजुएला की अधिकांश लड़कियां ब्रेड के सिर्फ एक टुकड़े के लिए अपना शरीर बेच रही है..... वेश्यावृत्ति कर रही हैं।

एक अच्छा लीडर अपने देश को 20 साल में सिंगापुर बना सकता है और एक नालायक लीडर अपने देश को वेनेजुएला जैसा बना देता है।

क्या गलती की थी वेनेजुएला के लीडर ने चलो कुछ प्रकाश डालते हैं.....

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, जब पूरी दुनिया में तेल की जबरदस्त माँग थी और दाम आसमान छू रहे थे, वेनेजएला की पांचों ऊँगलियाँ घी में थीं। 1945 में ही देश रोजाना एक मिलियन बैरल तेल का उत्पादन कर रहा था।

सरकार ने अपने नागरिकों को खैरात बांटना शुरु किया।

देश की हर सेवा सरकारी थी और हर सेवा मुफ्त थी।

तेल के बदले में दुनिया भर से सामान आता था, राशन, अनाज, फल सब्जी, दवाइयां, मशीनरी, कपड़ा हर चीज केवल इम्पोर्ट होती थी। तेल के बदले में.....और सरकार अपने नागरिकों को सबकुछ फ्री देती थी।

50 और 60 के दशक में जबकि सारी दुनिया हाड़ तोड़ मेहनत कर उत्पादन में लगी थी, वेनेजुएला में एक सूई तक न बनती थी और उनकी तो गोभी ओर टमाटर भी यूरोप से आती थी।

बहुत खूबसूरत देश है वेनेजुएला और यहाँ के नागरिक भी.....पर यदि कोई टूरिस्ट भूला भटका आ भी जाता तो पूरे देश मे कोई उसको पानी पूछने वाला न था.....आमतौर पर ऐसे देशों में बाहर से विदेशी आ जाते हैं रोजी रोजगार की तालाश में, पर चूंकि इस देश में फ्री सेवा थी इसलिए सभी पार्टियां और जनता विदेशी लोगों के देश में प्रवेश के खिलाफ थी कि हमारी मुफ्त सेवा का लाभ विदेशी क्यों लें।

इसका नतीजा ये हुआ कि कोई नागरिक खुद तो कुछ करता नही था, खेती बाड़ी कोई उद्योग धंधा, और बाहर से लेबर ही आउटसोर्स कर ले सरकार, ये होने नही देता था। इसलिए देश मे टूरिज्म तक विकसित न हुआ।

फिर एक दिन तेल के दाम गिरने लगे.....सरकार की एक तेल कंपनी थी.....PDVSA.....सरकार ने कंपनी से कहा, सबको नौकरी दे दो.....कंपनी बोली हुजूर हमको कर्मचारियों की जरुरत ही नही.....सरकार बोली, फिर भी दे दो.....इस तरह सरकार ने हर परिवार के कम से कम एक आदमी को सरकारी तेल कंपनी PDVSA में नौकरी दे दी जहां वो कोई काम नही करता था और मुफ्त की मोटी पगार लेता.....

धीरे धीरे हर चीज की कमी होने लगी। 3.5 करोड़ मुफ्तखोर जिन्होंने जिन्दगी में कोई काम नही किया था वो लूट खसोट करने लगे।

लड़कियाँ सब वेश्यावृत्ति में उतर गई। समाजवादी सरकार फिर भी नही चेती.....वो कर्जा ले के घी पिलाने लगी अपनी मुफ्तखोर जनता को।

आज राजधानी कराकास दुनिया का सबसे असुरक्षित शहर है जहाँ एक ब्रेड के टुकड़े के लिए हत्या हो जाती है और लड़कियाँ सिर्फ एक पीस ब्रेड के लिए शरीर बेचती हैं।

डेढ़ करोड़ बोलिवर में एक थाली खाना मिलता है.....

1999 के बाद देश की ये दुर्दशा शुरु हुई.....

इतना बड़ा देश सिर्फ 3.5 करोड़ लोगों के लिए गेहूं चावल सब्जी दूध पैदा नही कर सकता ?????

मैं कहता हूँ कि आज अगर वेनेजुएला की सरकार यहां पंजाब से सिर्फ 1000 किसानों को अपने यहां आमंत्रित कर ले और सिर्फ जरुरी मशीनरी दे दे तो सिर्फ 6 महीने में हमारे किसान इतना अनाज,सब्जी,फल और दूध पैदा कर देंगे कि पूरे वेनेजुएला से खाया न जाये.....अकेला एक कपूरथला जिला इतना खरबूजा पैदा करता है कि पूरा उत्तर भारत खाता है.....

सवाल है कि सरकार ने ये मुफ्तखोरी अपने नागरिकों को क्यों सिखाई ?

अपने देश की जनता को निकम्मा, नकारा, हरामखोर किसने बनाया ?

जब इतनी भुखमरी है देश में तो भी क्या जनता अपने घर के पिछवाड़े घीया तोरी कद्दू के बीज सिर्फ डाल दे तो भी दो महीने में इतनी सब्जी हो जाएगी कि उसको उबाल के खा के पेट भर लेंगे लोग....

पिछले 10 साल से भुखमरी है देश मे.....न सरकार चेती न जनता

अब एक नेता 5 करोड़ गरीब परिवारों को 6000 रुपये महीना दे कर भारत में भी 7 वेनेजुएला बनाना चाहता है।

क्या आप भी भारत को वेनेजुएला बनाना चाहते हैं.... आप से आग्रह है की इस लेख पर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें.....

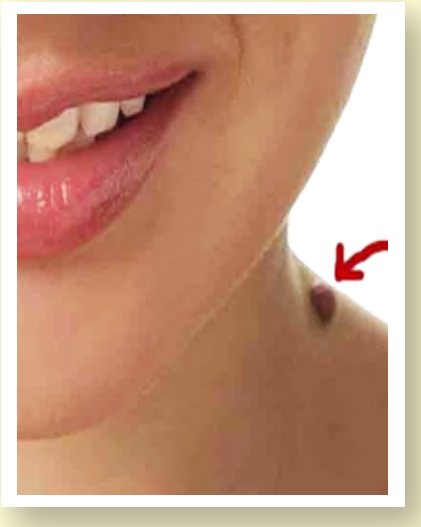

मस्सों के लिए सरल उपचार

आलू

आलू का टुकड़ा मस्सों पर रगड़ने से मस्से गायब हो जाते हैं।

सेब

खट्टे सेब का जूस नियमित रुप से मस्सों पर लगाने से मस्सेधीरे–धीरे झड़ जाते हैं।

हरा धनिया

हरे धनिये को पीसकर उसका पेस्ट बना लें और इसे रोजाना मस्सों पर लगाएं।

एलोवेरा

मस्सों से जल्दी निजात पाने के लिए आप एलोवेरा के जैल का भी प्रयोग कर सकते हैं।

समाज के विकास में छोटी सी भागीदारी

मित्रों गत वर्ष 2018–19 में आपकी चहेती सामाजिक संस्था ''तितिक्षा शुशवीर वेलफेयर सोसायटी'' द्वारा समाज हित में कुछ पुनीत कार्य अपने सदस्यों, शुभचिंतकों और मित्रों की मदद से किये गए। उनमें से कुछ प्रमुख कार्य हैं:– एक मेधावी छात्रा कु. वैष्णवी गुप्ता जो परिस्थितिवश धन की कमी के कारण अपनी शिक्षा को पूरा करने में असमर्थ थी, उसको तितिक्षा द्वारा उसके पिछले पूरे वर्ष की स्कूल फीस प्रति माह भरी गयी और अन्य प्रकार की मदद भी की गई। छात्रा की शिक्षा के लिए लगन को देखकर संस्था द्वारा इस वर्ष भी उसको स्कूल फीस के साथ हर प्रकार की शैक्षणिक मदद का निर्णय लिया गया। संस्था द्वारा निर्धन कन्याओं के विवाह में धन या अन्य आर्थिक वजहों से आने वाली परेशानी को दूर करने के क्रम में गत 8 मार्च 2019 को कु0 चाँदनी और 31 मार्च 2019 को मूक–बधिर कन्या गौरी शर्मा के विवाह हेतु गृहस्थी का सामान और आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

CMYK
DIGITAL PRINTING AVAILABLE

स्थापित 1937

FINE ART STUDIO Celebrating 80 YEARS 1937-2017

Celibrating 80 Years

फाइन आर्ट स्टूडियो एवं डिजीटल कलर लैब

कप, मग, पिलो कवर आदि 1000 तरह के आइटम्स पर फोटो बनवायें

पासपोर्ट फोटो तुरन्त, वैवाहिक प्रस्ताव हेतु फोटो

फोनः 0562-2857692

रोचक तथ्य

रेशम का कीड़ा 56 दिनों में अपने भार का 86,000 गुना भोजन खाता है.

भगत सिंह के माता–पिता ने जब भगत सिंह की शादी कराने की कोशिश करि तब भगत सिंह ने घर छोड़ दिया यह कहके–''मेरी दुल्हन सिर्फ मृत्यु होगी''। और फिर वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हो गए।

इंसान के दिमाग का वजन लगभग 1.4 किलो होता है।

1952 में अल्बर्ट आइंस्टीन को इज़राइल के राष्ट्रपति पद की पेशकश की गई थी पर उन्होंने इनकार कर दिया था।

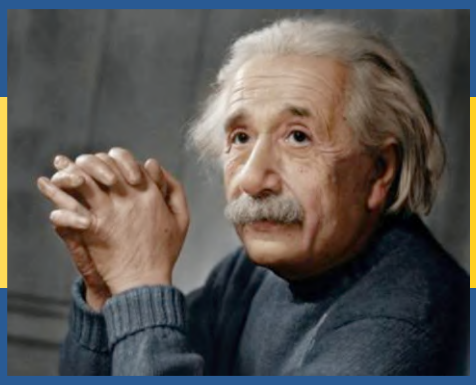

मनुष्य द्वारा खाए जाने वाले पदार्थों में शहद एक–मात्र ऐसा पदार्थ है जो कभी खराब नहीं होता।

दुनिया के 11 % लोग बाएं हाथ से खाते हैं।

कागज से बने हवाई जहाज को उड़ाने का रिकॉर्ड 226 फीट है, यह World Record है।

आप भारत में जहा कही भी हैं,
आप मंदिर से 7 किलो मीटर से ज़्यादा दूर नहीं हैं।

क्या आप जानते है?

अगर आप 111,111,111 को 111,111,111 से गुणाकर करोगे तो उत्तर 12,345,678,987,654,321 आएगा।

आँख खोल कर छींक लगाना नामुमकिन है।

जय हिन्द–जय भारत
डॉ.पार्थ सारथी शर्मा Ph.D.
गिनिज विश्व रिकार्ड धारी होम्योपैथिक फिजीशियन
(सर्वाधिक मरीजों के उपचार का रिकार्ड)
Honorary Doctorate - World Records University U.K.
Honoris Causa - For Treatment of
Most Number of Patients
138/6 एफ, आवास – विकास कॉलोनी, जैन मन्दिर
के सामने, सिकन्दरा योजना, आगरा मो. 7078546309
समयः प्रातः 10.00 से 1.00 शाम 7 से 9 रविवार सांय अवकाश

KR Interiors
A Complete House & Modular Kitchen
Vinit Agarwal
+91 9997540815
Off : Block C15, Shop No.16-F, Cloth Market, Near G.G. Hospital,
Sanjay Place, Agra-282 002 | Email : vinit.rock800@gmail.com 0562- 4307011

PHYSIO FOR U
ORTHOPAEDIC REHABILITATION CENTRE
Timings :
Morning : 9am to 1pm
Evening : 4pm to 7pm
(TUESDAY CLOSED)
Dr. RUCHI SINGH (PT)
B.P.T, M.P.T (ORTHO)
Dr. Ruchi Singh (PT)
B.P.T., M.P.T.
(Musuloskeletal & Sports)
CLINIC : UG-7, BHAWNA MALL, OPP. KAMAYANI HOSPITAL ROAD, AGRA
CONTACT : 9643263796, 9997518433

BLUE STAR
Dir. M.P. SINGH
Mob.: 98970 30680
Authorised Dealer
Air Conditioning Systems
AIR-REF ENGINEERS
Block No. 57/2, G-2, Kaveri Centre, Sanjay Place, Agra-282 002
0562-4000862 E –mail-: airref_bsl@rediffmail.com

संस्कारों भरी रोटी....

होम डिलीवरी

Daulatram's

अक्षर भोग

आटा

FRESH KHAYO FRESH RAHO

MP's SHARBATI
WHOLE WHEAT
CHAKKI ATTA

दौलत राम सुनील कुमार एंड कंपनी

25/20, छिपीटोला, आगरा, फोन 9760779580

G & G ENTERPRISES™

(COMPUTER & OFFICE MACHINES DIVISION)

29-G/114, Sanjay Place, Agra-2 Ph.: 0562 4001757 M.: 9837022998

सेल/सर्विस/फाईनेन्स सुविधा

छाया योग एवं नेचुरोपेथी सेन्टर

(योग, नेचुरोपेथी एवं फिजियोथेरेपी अनुसंधान केंन्द्र)

नीरव निकुंज, पुरुषोत्तम दास सावित्री देवी कैंसर अस्पताल के पीछे, सिकन्दरा

आगरा–282007 ! फोन नं. 9897718701, 8218995623

योग विभाग

योगासान, प्राणयाम (कुम्भक), मुद्रा, बन्ध, नौलीचालान तथा ध्यान एवं नादानुसंधान का अभ्यास विशेषज्ञों की देख–रेख में कराया जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा विभाग

महिलाओं एवं पुरुषों के लिए अलग–अलग विभाग जिसमें मालिश, भाप–स्नान, कटी–स्नान, ठंडा–गरम सेक, मड–बाथ, फूटबाथ, चादर लपेट आदि द्वारा काया कल्प की सफल व्यवस्था उपलब्ध है।

लग्जरी जिम

आधुनिक लक्जरी मशीनों द्वारा ट्रेनर की देख–रेख में कार्डिओ फिटेन, बॉडी–बिल्डिंग, स्लिमिंग शेड्यूल, फ्री–बॉडी मूवमेंट्स की व्यवस्था उपलब्ध है।

फिजियो थेरेपी विभाग

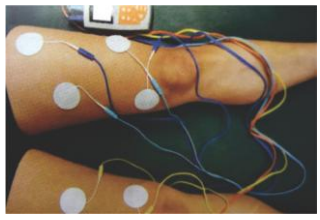

अत्याधुनिक मशीनों जैसे लेज़र थेरेपी, आई0एफ0टी0 एस0डब्लू0डी0, अल्ट्रसॉनिक थरेपी, ट्रेक्सन मसल टोनर, मसल रिटमुलेटर, वैक्स–बाथ आदि मशीनों द्वारा विभिन्न रोगों के इलाज की व्यवस्था उपलब्ध है।

समय: सुबह: 6.00 – 12.00 बजे तक, शाम : 4.00 –8.00 बजे तक

सेन्टर में एक–एक घण्टे के योगा क्लास तथा ध्यान के क्लास चलते हैं।

Director
Dr. Raj Kumar Sharma
M.Sc. (Yoga & Naturopathy)
D.Y.Ed.N.D. NDDY

मुझे निम्नलिखित अवधि के लिए ग्राहकी लेनी हैं–

वर्ष	अंक	कीमत	ऑफर कीमत	लाभ
एक	4	160/–	150/–	10/–
दो	8	320/–	290/–	30/–
तीन	12	480/–	440/–	40/–
चार	16	640/–	590/–	50/–
आजीवन सदस्यता (15 वर्ष)	60	2400/–	2100/–	300/–

नाम/श्री/श्रीमती/सुश्री.....पता.....

.....शहर.....

.....पिन.....सदस्यता अवधि.....फोन.

.....मोबाइल नं.....

.....मैं 'लोकस फॉर सक्सैस' के नाम संग्लन चेक/डी.डी. नं.

.....

रुपये.....दिनांक..... भेज रहा/रही हूँ।

कृपया इस सदस्यता फार्म को भरकर शुल्क (डीडी) के साथ इस पते पर भेजें :–

'लोकस फॉर सक्सैस', शॉप नं.–1, ब्लॉक–20, प्रथम तल, न्यू शू मार्केट, संजय प्लेस, आगरा (उ.प्र.)

ध्यान दें : आगरा के बाहार के चेक के लिए रूपये 50/– अतिरिक्त जोड़ें। आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, फर्रूखबाद के अलावा अन्य शहरों में डाक खर्च अतिरिक्त।